ईश्वर निराकार है या साकार ! हिन्दू है या मुसलमान—अथवा और कोई धर्मावलम्बी ! वह कहां रहता है, क्या करता है, क्यों करता है, कैसे करता है, इत्यादि बातें तू सोचता ही क्यों है। और सोचना ही है तो यह सोच—मैं कौन हूँ, कहा से आया, क्यों आया, क्या करना चाहिये, क्या कर रहा हूं। इतना ही बहुत है कि—तू उसको मानने से इन्कार मत कर ! और विश्वास रख कि वह परम-पिता ! जो कुछ भी करता है अच्छा ही करता है। वह समदर्शी है।

एकान्त में बैठकर ! आख मूंद कर, किसी समय शान्ति के साथ अपने हृदय से पूछिये तो सही ! कि—यदि मैं उसी परम पिता को ! जिसके कि हजारों, करोडों और असंख्य नाम हैं ! राम रहीम, कृष्ण करीम, विश्वम्भर अकबर या यीशुमसीह आदि के नाम से भी याद करलूं ! तो क्या आपत्ति है ! क्या हर्ज है ! क्या बुराई है।

किसी भी जबान में, किसी भी वक्त, किसी भी जगह, किसी भी तरह, उसको याद करलो ! वह सर्वव्यापी है। सबकी सुनता है। सभी भाषायें जानता है। क्योंकि—आजतक किसी ने यह बतलाया भी तो नहीं कि—खुदा को बिना चोटी और परमात्मा के सिर पर लम्बी चोटी तथा खुदावद करीम को ! लाल हरे रंग का, चौकडिया तह-मद बांधे और परमपिता परमात्मा को 'रामनामी' दुपट्टा गले में डाले निर्दोष जीवों के गलेकाटते मैंने देखा है। उस दयालु ने तो मनुष्य को बना कर, यह तो सोचा ही नहीं था कि मनुष्य कभी मनुष्यता को भूल-कर ! इतना कृतघ्नी और नीच भी हो सकता है कि—जो मेरे ही बनाये हुये जीवों को मार कर ! अपने आप को 'अमर' समझ बैठे।

तभी तो उस अनेकों नामवाले को अधर्म का नाश तथा दुष्टों का संहार करने के लिये अनेकों रूप धर कर ! संसार में आना ही पडा और आना ही पडेगा। क्योंकि वह न्यायकारी है ! दीनबन्धु है।

संसार में और है भी क्या ? जिसे देखो ! जहां देखो ! जिस समय देखो ! एक दूसरे को खाने में लगा हुआ है । क्या ? कृषिकर्म, क्या ? राज्य व्यवस्था, क्या समाजसेवी ! क्या ? धर्मरक्षक ! यह चीटियों को आटा खिलाने वाले ! और छान कर पानी पीने वाले 'अहिंसक' समय पड़ने पर मनुष्यों के सीनों पर हल चलाने में भी नहीं चूकते ।

क्या समाजवादी. क्या कम्यूनिस्ट, क्या सङ्घी, क्या अकाली, क्या गाधीवादी, क्या हिन्दू सभाई ! इत्यादि सभी अपने अपने चक्कर में हैं । अरे ! जब तुम्हें सेवा ही करनी है ! तो सेवा करो ! खूब दिल खोलकर सेवा करो ! सेवा कोई व्यापार तो है नहीं ! आत्म-शान्ति के लिये की जाती है । तो फिर यह सिर फुटव्वल क्यों ? ओहदे ही के लिये तो ! सच्चे सेवक को इन बातों से क्या ? सरोकार ।

अरे ! मैं देश भक्त हूं ! मैं तो देश के लिए मर मिटा ! अनेकों वार जेल गया ! वडी वडी यातनायें सहीं ! मैं तो शुद्ध खद्दर पहनता हूं ! गाधी जी का चित्र मेरी जेब में, हर समय रहता है ! मेरे घर पर 'तिरङ्गाझण्डा' लगा हुआ है ! अरे मुझे कुछ तो दो ! अब तो आजादी भी दिल गई ! एम० एल० ए ही बना दो ! और भी कुछ नहीं देते-तो नमक बेचने का लाइसेन्स ही दे दो । और जब अवसर मिल गया—तो हो गये पौ बारह ! या 'चोर बाजारी' और 'रिश्वत' तेरा ही सहारा है । फिर बेचते हैं 'नमक' एक रुपये का सेर भर । यह हैं, सच्चे देशभक्त ! पागल तो वह थे ! जिन्होने सीने पर गोली खाईं, फाँसी के तख्ते पर झूमें और कर गये भारत को आजाद ।

नारी ! भारतीय नारी ! हे आदि शक्ति ! तू नर ही क्या नारायण द्वारा भी पूजित है · लक्ष्मी है, दुर्गा है, सरस्वती है । देवता वहीं तो निवास करते हैं ! जहा तेरी पूजा होती है । और जहा होता है तेरा अपमान, वहा है सर्वनाश । कितना उदार होता है माता का हृदय !

कितना पवित्र होता है बहिन का प्रेम ! और कितने उच्चतम त्याग की पराकाष्ठा है पत्नी का पतिव्रत धर्म । सच कहता हूं कि भारतीय नारी के आदर्श जीवन की समता करने वाला विश्व के इतिहास में कोई भी उदाहरण नहीं है' । तो फिर 'हिन्दूकोड' में तलाक क्यों ?

जीवन संग्राम से ऊब कर निर्दोष पत्नी, अबोध बच्चे और वृद्ध माता पिता को छोड़ दिया । कपडे रङ्ग लिये जटाये रखलीं, खाक मलली या उठा लिया दण्ड । अपना कल्याण तो कर न सके, अब चले हैं ! 'विश्वकल्याण' करने को । देते हैं किसी को गण्डा, किसी तावीज, किसी को भभूति. किसी को बेटा ! वैसे तो हैं सर्व त्यागी पर भोगते हैं सब कुछ । अरे महात्माओं को इन बातों से क्या काम ! सन्यासी या साधू होना कोई बुरी बात नहीं है । त्याग ही से उनकी शोभा है। जब प्रभु के नाम पर सब कुछ त्याग दिया तो फिर यह आडम्बर क्यों ?

पैसा ! पैसा ! हाय पैसा जिसे देखो वही पैसे के पीछे पागल बना हुआ है । बेटी को बेचा, बेटे को बेचा 'इज्जत' बेचदी, ईमान बेच दिया, 'अन्याय' किया, धोखा दिया और काटे सगे सम्बन्धियों के गले ! तब बने धनवान । फिर सूझती हैं और ही कुराफाते अरे पेट ही तो भरना है, जीने के लिये खाओ ! खाने के लिये मत जियो। सोने के डले न कारू ने खाये ! न सिकन्दर ने वह भी अपने खजाने की चौदह ऊटों पर लदने वाली चाबियाँ, यहीं छोड गया । वाहरे पैसा ! निर्धन इस लिये पापी कि—उसके पास धन नहीं धनवान इसलिए पापी कि उसके पास धन है ! एक ही चीज का होना भी पाप ! और न होना भी पाप । कैसी विचित्र माया है ।

मैं हिमालय की चोटी पर चढ छाती ठोक ! डके की चोट कह सकता हू कि—संसार का कोई भी धर्म कोई भी संस्था और कोई भी मनुष्य, घृणा करने योग्य नहीं है । मेरा तो अपना विश्वास है कि—

जिस धर्म में घृणा जैसा घृणित शब्द है, वह धर्म ! धर्म ही नही है। क्योंकि जो ! सृष्टि के आदि में था वह 'आदम' था। और हम सब हैं ! उसी आदम की सन्तान आदमी। मनु की सन्तान मनुष्य ! एक दूसरे को भूल ही तो गये हैं। विभिन्न स्थानों में रहने के कारण-- वहां की जलवायु के अनुसार हमारे खान-पान रहन-सहन और वोल-- चाल में जो अन्तर पड़ गया है ! वह कोई धर्म या मज़हब नहीं है। धर्म तो सबका एक है ! और उसका नाम है सचाई !

जो आदमी जिस देश में रहना है ! उसे वहा की 'संस्कृति' को अपनाना ही पडेगा। यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो उसकी भूल है। वह सुख शान्ति से न रह सकेगा' सोचिये तो सही ! जिस देश में हमने जन्म लिया, अन्न खाया, पानी पिया, धूल में खेले, वडे हुये— उसे अपनी जन्मभूमि या पवित्र भूमि न समझना ! कृतघ्नता नहीं तो और क्या है ? जिसके टुकडे खाये, उसी के टुकडे किये ! कितनी नीचता है। भारत में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति भारतीय है ! यदि वह अपने को भारतीय नहीं समझता ! तो उसे भारत छोड देना चाहिये।

किसी के अधिकारो को छीन लेना—अपने घर की रोशनी के लिये ! दूसरों के घर फूंकना, जीभ के स्वाद के लिये ! अपने पेट को निर्दोष जीवों की कब्र बनाना, किसी की सज्जनता का दुरुपयोग करना ! यही तो जुल्म कहलाता है। जालिम की भी कोई जाति होती है ! जो जुल्म करे, वही जालिम है। तो फिर हिन्दू मुसलमान आदि का प्रश्न ही क्या ? कौन सहन कर सकता है जुल्मों को। सहन करना भी तो नहीं चाहिये। क्योंकि जुल्म को सहना भी तो उतना ही बुरा है— जितना कि जुल्म करना। अहिंसा की रक्षा हिंसा ही से तो की जाती है, अशान्ति की अन्तिम सीमा ही का नाम तो शान्ति है ! वस जुल्मों का सर्वनाश करके विश्व कल्याण करना ही ! मनुष्य का परम कर्त्तव्य है।

मन्दिर का पुजारी, मसजिद का मुल्ला, चर्च का पादरी इत्यादि यह सभी केवल 'नामधारी' धर्म के ठेकेदार। परमात्मा की पूजा या इबादत करते ही कब हैं। आपस में सिर फुटव्वल कराते हैं! विष फैलाते हैं! एक दूसरे से मिलने ही नहीं देते। तू काफिर है! तू मलेच्छ है! करदो जिहाद! बोलदो हर हर महादेव! दुनियाँ को दोजख बनाने वाले यह दुष्ट फिर करते हैं! जन्नत की तमन्ना, स्वर्ग की अभिलाषा। मैं नहीं समझ सका कि—इनकी खोपडी में यह फितूर भर किसने दिया कि—मसजिद की अजान से 'राम' को चिढ़ है और मन्दिर के शङ्ख की आवाज से 'रहीम' को नफरत!

भोली जनता को धोखे में डाल! धर्म की दुहाई और मजहब का नाम लेकर महा अनर्थ, करने वाले! नर पिशाचों! नङ्गी औरतों के जलूस! और अबोध बच्चों को आग में भुनते हुये देखकर-प्रसन्न होनेवाला क्या कभी राम या रहीम कहला सकता है? तो फिर यह हठधर्मी क्यों? यह रक्तपात क्यों? हृदय हीनों! प्रेम ही परमात्मा है।

और देखो! महापुरुष कहीं आसमान से तो उतरते नहीं! न रसातल ही से आते हैं। वह भी हमारी तुम्हारी तरह धूल में—रेंगते हुये घुटनों के बल चले और खडे हो गये। समय आया, अपने उत्तरदायित्व को 'पूर्णरूप' से निभाया और बन गये बात की बात में महापुरुष। न,मालुम कितने आये और आयेंगें। चले गये और चले जायेंगे। किन्तु यह निष्ठुर संसार! किसीकी भी मानने वाला नहीं है। न मानी है, न मानेगा। क्योंकि इसके पास इससे अतिरिक्त और है भी क्या? ईसा को क्रूस! मंसूर को सूली! और गाँधी को गोली! धन्य हैं वह! जिनकी सेवाओं का संसार ऋणी है।

श्री माँ-मन्दिर
मंडी धनौरा, मुरादाबाद

स्नेही—
'विकल'

बलिशाला

(१)

'बलिशाला' का द्वार खोल, जय बोला बलि होने वाला ।
वे ही आवें देश धर्म की, जिन्हें जलाती हो ज्वाला ॥
सुरा, सुराही, शीशा, सागिर, सुरबाला का नाम नहीं ।
विफल विश्व का प्रतिपल जीवन, सफल बनाती बलिशाला ॥

(२)

प्रात, सन्ध्या, सूर्य, चन्द्रमा, भूधर, सिन्धु, नदी, नाला ।
जल थल नभ क्या हैं ! न जानता, वर्षा आँधी हिम ज्वाला ॥
विश्व नियंता ! कभी न देखा, पर इतना कह सकता हूँ ।
जिसने विश्व रचा है उसने, प्रथम बनाई बलिशाला ॥

(३)

इतना तो नासमझ नहीं था, वह जग को रचने वाला ।
जैसा करै ! भरैगा वैसा, तभी कर्म-बन्धन डाला ॥
सतयुग, त्रेता, द्वापर कलियुग, चारों युग बतलाते हैं ।
कहाँ रहे थे सभी एक से, कहाँ नहीं थी बलिशाला ॥

(४)

समझ नहीं आती है माया, क्यों ऐसा चक्कर डाला ।
उतना ही उलझा है जग में, जितना सुलझाने वाला ॥
एक शक्ति के तीन रूप हैं, ब्रह्मा विष्णु और महेश ।

(५)

यज्ञ निमत्रण दिया न शिव को, रहा 'दक्ष' का उर काला ।
पार्वती सह सकी न यह, अपमान उठी उर में ज्वाला ॥
विना बुलाये कभी किसी का, कहाँ हुआ सम्मान भला ?
पिता यज्ञ मे शैल-सुता ने, अपनी खोली बलिशाला ॥

(६)

सोचे समझे विना असुर को, था ऐसा वर दे डाला ।
रख देगा जिसके सिर पर कर, उसे जला देगी ज्वाला ॥
हाथ असुर ने रखना चाहा, जब शिव शकर के सिर पर ।
नारी बन नारायण खोली, 'भस्मासुर' की बलिशाला ॥

(७)

इसको कहते हैं पत्थर-दिल, नहीं एक आँसू डाला ।
कर्म-योग में ऐसा—ही बन, जाता कर्मठ मतवाला ॥
मोरध्वज के अतिथि-धर्म की, उपमा मिलनी महा कठिन ।
मात पिता निज सुत की खोलें, हर्षित होकर बलिशाला ॥

(८)

राज-पाट को त्याग वचन निज, अन्त समय तक था पाला ।
पुत्र प्रिया को वेच बना खुद, वह मरघट का रखवाला ॥
कर्म-वीर कर्त्तव्य निभाया, विपदा से कब मुँह मोडा ।
'हरिश्चन्द्र' के सम असत्य की, खोली किसने बलिशाला ॥

(९)

बोला सुत को बाँध खम्ब से, हिरएकश्यपु मतवाला।
बता कहाँ! भगवान छिपा है, कर बैठा क्या मुँह काला॥
कहा भक्त ने असुर-निकन्दन, आओ काटो मम बन्धन!
प्रकट तपोबल हुआ खोल–डाली पशुबल की बलिशाला॥

(१०)

कौन जानता है पल भर में, किसका क्या होने वाला।
राज तिलक की खुशी मची थी, रंग-भंग सब कर डाला॥
दशरथ-मरण राम बन-वासी, सीता-हरण भरत गृह-त्याग।
कुमति केकयी के उर बैठी, घर में खोली बलिशाला॥

(११)

राम लखण को भेष बदल कर, चुरा ले गया मतवाला।
देवी पर बलि लगा चढाने, और न कुछ देखा भाला॥
कहा राम ने ऊँचे स्वर से, कहाँ छिपे बजरगबली।
प्रकट पवन-सुत हुआ खोल दी, अहिरावण की बलिशाला॥

(१२)

अरे! महा पंडित होकर भी, नीच-कर्म करने वाला।
कब सुख पाया उसे जलाती, उसके कर्मों की ज्वाला॥
इक लख पूत सवालख नाती, जिसके जग बतलाता है।
उस रावण घर दिया न बाती, बनी लंक में बलिशाला॥

(१३)

लगा कलंक राम वन भेजी, सीता निष्कलंक वाला।
फिर भी जपती रही प्रेम से, राम नाम की वह माला॥
वोले लव-कुश माँ मत घबरा, पितु से हम वदला लेंगे।
ऐसी खोलें नहीं खुली हो, कभी विश्व में वलिशाला॥

(१४)

भाभी कहता लक्ष्मण दौड़ा, राम सिया सिया मतवाला।
दोनों हाथ उठा ऊपर को, वोली वनवासिन वाला॥
धरती माता मुझे जगह दे, जगह न मुझको दुनियाँ में।
लगी समाने रहे देखते, सव 'सीता' की वलिशाला॥

(१५)

अरे! क्रौंच पक्षी का जोड़ा, हुआ प्रेम में मतवाला।
एक वधिक ने वाण मार कर, नर को घायल कर डाला॥
नारी के सुन कर विलाप को, हृदय किसी का भर आया।
आदि कवीश्वर कविता जननी, अरे! यही है वलिशाला॥

(१६)

वही जानता है जलती हो, जिसके अन्तर में ज्वाला।
स्वभिमान के पीछे अपना, सव से हाथ उठा डाला॥
रणस्थली में गर्म रक्त से, सींच गई रण-चडी केश।
किसे खवर थी है द्रोपदि के, वाल वाल में वलिशाला॥

(१७)

बातों में आ गया न समझा, दुर्योधन का उर काला ।
सात महारथियों ने धोका, देकर चक्कर में डाला ॥
क्यों ! न फोड़ीं आँख अरे ! आचार्य द्रोण धिक्कार तुम्हें ?
रहे देखते मूक एक टक, 'अभिमन्यु' की बलिशाला ॥

(१८)

तड़प रहा बेताब पलंग पर, हुआ प्रेम में मतवाला ।
आती होगी आज पिऊँगा, दिलबर से दिल भर प्याला ॥
उठा एक दम चिपट गया, तब काट पैतरा काट दिया ।
सैरन्ध्री बन भीम बली ने, खोली 'कीचक' बलिशाला ॥

(१९)

गया चोर की तरह भीरु ने, कर्म कलंकित कर डाला ।
अमर हुआ तो क्या माथे का, घाव नहीं भरने वाला ॥
अरे नीच ! अश्वत्थामा क्यों, धर्म-युद्ध बदनाम किया ।
द्रोपदि के सुत सोये सुख-मय, नींद खोल दी बलिशाला ॥

(२०)

बुलवा कर धोके से दिल में, खुश होता होने वाला ।
जब आये तब भरी सभा ने, सहसा हमला कर डाला ॥
सब को यमपुर भेज कृष्ण ने, छाती पर चढ़ प्राण लिये ।
उसी 'कंस' की रंगभूमि, बन गई उसी की बलिशाला ॥

(२१)

उससे बढ कर और कौन अब, होगा शुद्ध हृदय वाला।
अपने मरने का रहस्य भी, जिसने आप बता डाला॥
अरे पार्थ! तुझमें कुछ दम था, तो उसके सन्मुख आता।
आड शिखण्डी की आखिर, बन गई भीष्म की बलिशाला॥

(२२)

श्री कृष्ण का सर्व प्रथम, जब था पूजन होनेवाला।
क्रोधित हो यह देख गालियाँ, लगा सुनाने मतवाला॥
अरे! बोल वह कब तक सुनता, सुनलीं उसकी सौ गाली।
वही राजसूयज्ञ बना, शिशुपाल दुष्ट की बलिशाला॥

(२३)

राज-नीति औ धर्म-नीति थी, भेद-नीति सबसे आला।
काल प्रबल के आगे सब कुछ, भूल गया वह मतवाला॥
अतुलित बल योगेश अलौकिक, चक्र सुदर्शन धारी था।
उसी 'कृष्ण' की एक बधिक ने, बन में खोली बलिशाला॥

(२४)

कुशा पैर में चुभी तभी तो, उसका मूल मिटा डाला।
ऐसा ही पागल होता है, सच्ची एक लगन वाला॥
स्वाभिमान का दिव्य-देवता, कैसे निज अपमान सहे।
महा हठी चाणक्य! खोलदी, महानन्द की बलिशाला॥

(२५)

गिरा गोद में घायल पक्षी, आतुर हो देखा भाला।
वहीं बधिक आ गया भूख से, था व्याकुल मरने वाला॥
जीवन मरण आज 'गौतम' को, खूब समझ में आया था।
किस पर दया करूँ क्या दुनियां, इसी तरह है बलिशाला॥

(२६)

रावण आदिक हुए अनेकों, इसी भूमि पर भूपाला।
छोड़ सभी धन धाम गया, कर फैलाये जाने वाला॥
लिखा 'भोज' ने ले जाना तुम, छाती पर धर मुञ्ज चचा।
मुझे राज की चाह नहीं थी, क्यों खोली फिर बलिशाला॥

(२७)

नारी के पंजे में पड कर, जो चाहा सो कर डाला।
हाय! बाप क्यों हुआ निर्दयी, बेटे को खाने वाला॥
राज्य त्याग कर बना अहिंसक, वह कलंक तो नहीं मिटा।
हा! अशोक क्यों तुमने खोली, सुत सुलाण की बलिशाला॥

(२८)

हुआ कलिङ्ग विजय तबहीं, जब लाखों को बलि कर डाला।
रणस्थली को देख शोक में, था अशोक वह मतवाला॥
यह अनर्थ हा! यह अनर्थ क्या, एक जरा सी इच्छा थी।
पत्थर दिल को भी प्रियदर्शी, कर देती है बलिशाला॥

(२६)

हाथ कफन से वाहर कर दो, नहीं हमारा दिल काला।
देखे दुनियाँ खाली हाथों, जाता है जाने वाला॥
कहा 'सिकन्दर' ने मरते दम, मेरे गम में मत रोना।
वह ही रोवे जिसके घर में, नहीं खुली हो वलिशाला॥

(३०)

चढा क्रास पर कीलें ठोकीं, दिल को घायल कर डाला।
फिर भी अन्तिम दम तक गाता, रहा यही मरने वाला॥
विश्व-नियन्ता प्राणि मात्र के, अपराधों को करे क्षमा।
धन्य महात्मा 'ईसा' की जय, वोल उठी थी वलिशाला॥

(३१)

किसे खवर थी ऐसी जलती, इसके सीने में ज्वाला।
जिसके वल पर उस वाला ने, इतना करतव कर डाला॥
जला दिया जिन्दा तो क्या है, फिर वह आजाद रही।
अरे! फ्रास की थी स्वतन्त्रता, देवि 'जोन' की वलिशाला॥

(३२)

यहाँ न कोई हिंसा करना, लौट जाय लडने वाला।
महादेव! भगवान करेंगे, आप शत्रु का मुँह काला॥
हुये अंध-विश्वासी कायर, होना था सो वही हुआ।
'सोमनाथ' में खोला गया, महमूद गज़नवी वलिशाला॥

(३३)

सबसे कहता 'फिरा जगत में, है तूफाँ आने वाला।
मगर न माना सत्य किसी ने, समझा है भोला 'भाला॥
अरे! वही जो आदि पुरुष, तुम मनु कहो या नूह कह।
बैठ नाव में देख चुका है, इस दुनियाँ की वलिशाला॥

(३४)

खौफ नहीं है 'तुझे अक्ल पर, पडा हाय! पर्दा काला।
सच 'कहदे! क्या नूर इलाही, तूने है देखा भाला॥
जिसे खुदा का जल्वा कहते, वह क्या था कुछ और न था।
गिरा तूर पर 'मूँसा' देखी, एक झलक जब वलिशाला॥

(३५)

महरबान होकर मौला ने, बख्शा था! रुतबा आला।
अरे? तभी तो था मुर्दों को, वह जिन्दा करने वाला॥
'काफिर' कहा उसे तो उसने, खाल खींच अपनी दे दी।
झुका शम्श हा! देख शम्श, तबरेज तुम्हारी वलिशाला॥

(३६)

भूल खुदा को माँग पेड़ से, पनाह छिपा छिपने वाला।
दामन बाहर रहा जरा सा, दुश्मन ने देखा भाला॥
यहीं छिपा है बोल उठा, शैतान करो इसके टुकड़े।
तब आरे से खोली थी, जरदश्त तुम्हारी वलिशाला॥

(३७)

दुनियाँ में रह कर दुनियाँ से, दूर सदा रहने वाला।
किसको सिजदा करता जिसने, सब अरमान मिटा डाला॥
चढा दार पर तब देखा, दिल वाले का दिल दुनियाँ ने।
बेकसूर मसूर! अनलहक, बोल उठी थी बलिशाला॥

(३८)

बोल कौन! था पथ-भ्रष्टों को, सत पथ पर लाने वाला।
मानवता के लिये प्रेम से, पिया हलाहल का प्याला॥
हुआ सिकन्दर और अरस्तू, अफलातूं लुकमाँ तो क्या।
अमर वीर 'सुकरात' तुम्हारी, अमर रहेगी बलिशाला॥

(३९)

अरे नीच! जयचन्द बना तू, भाई को खाने वाला।
आँख फोड कर हाय! कैद में, राय पिथौरा को डाला।
धन्य 'चन्दबरदाई' तुमको, धन्य तुम्हारे साहस को।
खूब मुहम्मद गौरी की, गजनी में खोली बलिशाला॥

(४०)

घायल रण में पडा पिथौरा, समझ उसे मरने वाला।
गीध बैठने लगे देखता था, दिलेर दिल दिल वाला॥
माँस फैंक निज कर से अपना, बचा लिये स्वामी के प्राण।
धन्य 'संयमाराय' तुम्हारी, अमर रहेगी बलिशाला॥

(४१)

प्यासा था बनवीर खून का, उदयसिंह के मतवाला।
तूने स्वामी सुत-रक्षा हित, अपना सुत मरवा डाला॥
फिर भी आँसू नहीं निकाला, निकली मुख से हाय कहाँ।
अमर रहेगी 'पन्ना' माँ की, वीर-भूमि में बलिशाला॥

(४२)

और नहीं है! कोई अब तो, मेरा गिरधर गोपाला।
डाल गले में साँप प्रेम से, पिया हलाहल का प्याला॥
बनी राज रानी दीवानी, सारी 'दुनियाँ ठुकराई।
'मीरा बाई' अमर बनाई, प्रेम-भक्ति की बलिशाला॥

(४३)

कामातुर को पटकी देकर, पहिले तो भू पर डाला।
तान कटारी फिर सीने पर, चढ बैठी उसके बाला॥
हा! हा! खाने लगा खून पी, एक घूंट फिर छोड दिया।
अकबर को मीना बजार में, 'किरण' दिखाई बलिशाला॥

(४४)

किस किस को अब रोने बैठे, क्या रोवे रोने वाला।
घाव न पहला भरने पाया, और उभर आया छाला॥
जर के पीछे मूल्य जानका, जान सका न चरन्वाहा।
दुखिया दिल्ली देख चुकी है, नादिरशाह की बलि

(४५)

खिलजी ने चित्तौड मिटाने का, विचार कर ही डाला।
पीना चाहे स्यार सिंहनी, के हाथों ही से प्याला॥
जीने जी जल गई सती के, नहीं धर्म को आँच लगी।
वीर पद्मनी के जौहर ने, खूब जगाई बलिशाला॥

(४६)

शाहजहाँ को आह! कैद में, उसके बेटे ने डाला।
पानी को भी रहा तरसता, आखिर तक मरने वाला॥
शहजादी जहांनारा तुझ पर, वारूँ लाखों ललनायें।
खिदमत करी पिता की तूने, कभी न छोडी बलिशाला॥

(४७)

ताड गया चालाकी वह भी, था आफत का परकाला।
बडी शान से मुलाकात को, चला मरहठा मतवाला॥
लगा शिवाजी को सीने से, अफजलखाँ ने वार किया।
मार बघनखा वहीं खोल दी, शेर शिवा ने बलिशाला॥

(४८)

हमने देखा है भाई का, भाई वध करने वाला।
मजहब का पाबंद वही, औरंगजेब उर का काला॥
दारा को कर कत्ल निकालीं, आँख पैर से मलने को।
देख आगरा लाल किले में, बनी हुई है बलिशाला॥

(४९)

बच्चों की तू तू मैं मैं ने, कितना किस्सा कर डाला।
नहीं बात कुछ बढने पाती, होता कोई दिल वाला॥
दिया हुक्म अब इसे मिटा दो, मजहब की तौहीन करी।
छोड 'हकीकत' गया धर्म की, आड कहाँ थी बलिशाला॥

(५०)

पहिले तो गर्दन तक दोनों, भाई को चिनवा डाला।
तानतेग़ फिर सर के ऊपर, बोला कातिल मतवाला॥
धर्म छोड़ दो! बच सकते हो, बोले फिर भी है मरना।
'वाह! गुरु की फतह' एकदम, गूँज उठी थी बलिशाला॥

(५१)

देख धर्म ही साथ जायगा, और न कुछ जाने वाला।
समझाने पर भी जालिम ने, काटा जिस्म जला डाला॥
जिसे समझते हो दिल्ली में, शीश गज का गुरुद्वारा।
तेग़ बहादुर गुरु अर्जुन की, यहीं बनी थी बलिशाला॥

(५२)

बेटे का सिर काट कलेजा, था उसके मुँह में डाला।
लोहे के पिंजरे में करके, बद जलादी फिर ज्वाला॥
लिखा धर्म का मर्म रुधिर से, गर्म शलाखों के ऊपर।
धन्य वीर! बदा बैरागी, धन्य तुम्हारी बलिशाला॥

(५३)

वह फकीर बूढा जिसको था, एक सभी अदना आला।
जालिम ने उसकी गर्दन में, फासी का फंदा डाला॥
देहली वालों जिसे आज कल, जामा मसजिद कहते हो।
अरे! यही तो है हजरत, सरमद शहीद की बलिशाला॥

(५४)

पानी है तो इसे उबालो, बोला औरंग मतवाला।
धीरे धीरे आग जलाती, रोती थी मुसलिम बाला॥
जल जाना ओ सच्चे आशिक, लेकिन मुँह से आह न हो।
डेग बनाया था 'मुखफी' ने, आकिलखाँ की बलिशाला॥

(५५)

आस्तीन में साँप छिपा तब, क्या करता करने वाला।
बिठा पालकी में धोखे से, उसे निहत्था कर डाला।
रहा माँगता अन्त समय तक, मिली नहीं तलवार उसे।
काँप उठी थी निर्दयता भी, लख 'टापू' की बलिशाला॥

(५६)

स्वार्थ सिद्ध उसको कहते हैं, अपना मतलब हो आला।
जैसे भी हो जाय उसी विध, जो चाहा आ कर डाला॥
समय निकल जाता है लेकिन, बात अमर हो जाती है।
नंद कुमार चेतसिंह की, हा! बनी बनारस बलिशाला॥

(५७)

वह नवाब बंगाल कि जिसका, कभी दबदबा था आला।
पालीसी से जंग पलासी में, उसको चक्कर डाला॥
काट काट कर टुकडे उसकी, माँ! के आगे डाल दिये।
आह! मीर जाफर ने खोली, थी सिराज की बलिशाला॥

(५८)

पहिले तो चाकू से अपना, चाक कलेजा कर डाला।
फिर गर्दन की रगें काट कर, मिटा आप मिटने वाला॥
लार्ड क्लाइव! तुम्हें घृणा थी, जब इतनी इस जीवन से।
तब भारत में आकर तुमने, क्यों खोली थी बलिशाला॥

(५९)

कारीगरी हमारी जिसकी, है मिसाल सबसे आला।
वही थान मलमल का जिसको, बाँस नली में था डाला॥
उफ! इनाम यह मिला अँगूठे, काटे गये जुलाहों के।
ढाका औ मुंगेर बनाये, शिल्प-कला की बलिशाला॥

(६०)

बोल! बहादुर शाह दिया क्या, तोहफा 'हडसन' मतवाला।
कौन? रहा अब मुगल राज का, अरे! नाम लेने वाला॥
देखे सिर बेटे पोतों के, शाह 'जफर' ने मुँह फेरा।
आह! हम्द-लिल्लाह रहे, ता-हश्र याद यह बलिशाला॥

(६१)

माँ बहिनों की इज्जत पर भी, बोल कभी आँसू डाला।
कौन राम लगती दुनियाँ में, रहा आज कहने वाला॥
क्या छोड़ा क्या अरे! न लूटा, सभी तरह पामाल किया।
अवध बेगमों ने सींची थी, खून जिगर से बलिशाला॥

(६२)

नाना और ताँतिया टोपी, पिया 'मुबारिक' ने प्याला।
हुये नशे में चूर जलादी, घर घर में जीवन ज्वाला॥
बाँध पीठ सुत चढ घोड़े पर, झूम झूम कर मतवाली।
खोल गई सन सत्तावन में, झाँसी वाली बलिशाला॥

(६३)

धोके से मारा जाता है, सत्य बात कहने वाला।
पिला दूध में काँच लोभ वश, अपना धर्म गवाँ डाला॥
ऋषि 'दयानन्द' तेरे उर का, बार पार क्या खाक मिले।
बख्शा कातिल को इनाम, बदनाम नहीं की बलिशाला॥

(६४)

यही मुरादाबाद जहाँ पर, था दिलेर दिल मतवाला।
जन्मभूमि हित जिसने अपना, तन मन धन सब दे डाला॥
मिली सजायें मौत क्षणिक में, छोड़ गया पंजर योगी।
टर्की में देखो सूफी—अम्बाप्रसाद की बलिशाला॥

(६५)

जीते जी कर सके न कुछ, मरने पर सब कुछ कर डाला।
लूट खजाना 'कोहनूर' लेगया, हाय! दिल का काला॥
'रानीजिन्दा' कैद करी, लंदन 'दलीपसिंह' भेज दिया।
तब 'राणा रणजीतसिंह' के, खुली राज्य की वलिशाला॥

(६६)

सैनिक दल ने! घेर महल को, किया कारनामा काला।
'वाजिदअलीशाह' से जबरन, जो चाहा लिखवा डाला।
छीन सल्तनत! उसे कैद, करके कलकत्ते में रक्खा॥
हा! कैसा अन्धेर समय का, फेर 'अवध' की वलिशाला॥

(६७)

कारतूस जब 'गाय-सुअर' की, चर्बी वाला दे डाला।
भड़क उठे! भरत के सैनिक, अरे! विधर्मी कर डाला॥
'मंगलपांडे' नहीं सह सका! ह्यूसन का संहार किया॥
फिर सत्तावन की ज्वाला! बन गई, भयंकर वलिशाला।

(६८)

'दत्तक पुत्र' प्रथा को जब; डलहौजी ने रद कर डाला॥
था कितने ही राजाओं का, वंश नाश होने वाला।
जितनी थीं सन्तानहीन, विधवा-रानी सर्वस छीना॥
बृटिश राज्य में राज्य मिला हा! बनी राज्य की वलिशाला।

(६९)

हाथी, घोडे, वस्त्राभूषण, सब नीलाम करा डाला।
तोडा फर्श ! दृश्य था तब तो, दिल को दहलाने वाला ॥
'मृत्यु शैया' पर दुख पाती, अन्नपूर्णा ! महरानी।
देख रही थी ! अपनी अपने-आप राज्य की बलिशाला ॥

(७०)

हुआ ग्वालियर विजय, सखिया, भागगया दिल का काला।
डूब गया फिर ! राग रग में, हाय पेशवा मतवाला ॥
समझाया ! पर एक न मानी, वीर 'लक्ष्मी बाई' की।
स्वतन्त्रता की हृदय हीन, बन गये स्वयं ही ! बलिशाला ॥

(७१)

कितनों ही के गले बाध कर, वृक्षों पर लटका डाला।
लटकाया फिर उनके नीचे ! लगा रहा जालिम ज्वाला ॥
यही फतेहगढ शहर समूचा, लूट लिया औ फूक दिया।
हंसता था 'रैनोड' हमारी, देख देख कर बलिशाला ॥

(७२)

'चढै खालसा' दिल्ली पर, यह 'सत्य गुरू' कहने वाला।
इस भविष्यवाणी को ! तुमने, कैसे झूठ समझ डाला ॥
यही वक्त है ! लो बदला ! चढ गया रग अंग्रेजों का।
समझ न पाये चाल ! खालसा, लगे खोलने बलिशाला ॥

(७३)

हाथी के पैरों से बाधा, कर जालिम ने मुंह ! काला ।
शहर घुमाया फिर कढाह में, बैठा कर चूना डाला ॥
पानी के पड़ते ही सारा ! जिस्म हुआ छिछडे छिछड़े ।
यही 'मुरादाबाद' बना 'नन्नू नवाब' की बलिशाला ॥

(७४)

नगा करके ! तावे के टुकड़ों से, दाग लगा डाला ।
फिर उनके ही खूं से होली, खेल रहा था मतवाला ॥
हिन्दू मुस्लिन बन्द पड़े थे, गाय सुअर की खालों में ।
उन्हें आग में भून ! बनाये, मन्दिर मसजिद बलिशाला ॥

(७५)

उसे खबर क्या थी ! मेरे संग है धोखा होने वाला ।
'अहमदशाह मौलवी' मिलने, आया वहीं मार डाला ॥
फिर इनाम ! पाया पावन के. राजा ने अंग्रेजों से ।
तुझ पर क्या विश्वास, दिखादी ! वहीं उसे भी बलिशाला ॥

(७६)

सुन कर जिसका नाम ! फिरंगी पर पड जाता था पाला ।
एक लालची ने धोखा दे, उसको बन्धन में डाला ॥
फांसी पर चढ़ गया ! अमर—होगया 'तांतिया' मरदाना ।
पूर्णाहुति बन गयी, गदर की, वीर ! तुम्हारी बलिशाला ॥

(७७)

मार कह कहा ! चढ फाँसी पर, हंसा जोर से मनवाला ।
क्या होता है ! कमी नहीं है, मुझको अगर मिटा डाला ॥
मेरे खूं से अरे ! अनेकों; 'पीर अली' होंगे पेदा ।
मैं न सही तो वह खोलेंगे, बृटिश राज्य की बलिशाला ॥

(७८)

उधर अकेले वीस ! इधर, अंग्रेजों की पल्टन आला ।
खूब लडे दिल खोल नाक में; दम गोरों की कर डाला ॥
उडा तोप से ! फूंक दिया घर, तब आगे को फौज बढी ।
'यही इटावा' यही ! बनी है, उन वीरों की बलिशाला ॥

(७९)

लगी हाथ में गोली ! उसने; हाथ कलम ही कर डाला ।
फेंक दिया गगा में सहसा, बोल उठा ! जय मतवाला ॥
अस्सी वर्ष का बूढा होगा, कौन 'कुंवरसिंह' सा नाहर ।
जिधर उठाई आंख उधर बन, गई पलक में बलिशाला ॥

(८० [

कुंवरसिंह मर गया अमरसिंह; हार गया जब दिलवाला ।
तब कब्जा जगदीशपुरा पर, अंग्रेजों ने कर डाला ॥
मरी तोप से ! लिपट गईं सब, और पलीता लगा दिया ।
राज महल को ! राजरानिया, बना रहीं थी बलिशाला ।

(८१)

'भैणी साहब' मस्त हुये, पीकर ! आजादी का प्याला।
वह 'कूका विद्रोह' लगी थी, एक साथ उर में ज्वाला॥
बाघ तोप के मुंह से ! अड़सठ, वीरों को हा ! उड़ा दिया।
'गुरू रामसिंह' की वर्मा में, फिर खोली थी बलिशाला॥

(८२)

भारतीयों का ! अहित 'हापकिंसन' ही था करने वाला।
देख देख कर जुल्म वीर के, जलती थी उर में ज्वाला॥
भरी सभा में मार ! तमंचा फैंक, चढ गया फांसी पर।
बनी कनाडा अमरीका में, 'मेवासिंह' की बलिशाला॥

(८३)

है कोई ? हर दयाल सरीखा, आजादी का मतवाला।
हो सशस्त्र विद्रोह ! लगी थी, यही एक उर में ज्वाला॥
इसी ध्येय पर तूने अपना, तन मन धन सब वार दिया।
तेरे ही ! पीछे जीवन भर, रही घूमती बलिशाला॥

(८४)

हंस हंस कर ! तंग कोठरी, में भर बन्द किया ताला।
कितनों ही को, संगीनो से, बींध ! कुये को भर डाला॥
वह 'कल्यादां बुर्ज' और, कल्यादा खूं 'अजनाले' का॥
कौन भूल जायेगा ! जालिम, 'कूपर' तेरी बलिशाला॥

[उन्नतीस]

(७७)

मार कह कहा ! चढ फाँसी पर, हसा जोर से मनवाला।
क्या होता है ! कमी नहीं है, मुझको अगर मिटा डाला ॥
मेरे खूं से अरे ! अनेकों; 'पीर अली' होंगे पैदा ।
मैं न सही तो वह खोलेंगे, बृटिश राज्य की बलिशाला ॥

(७८)

उधर अकेले वीस ! इधर, अंग्रेजों की पल्टन आला ।
खूब लडे दिल खोल नाक में; दम गोरों की कर डाला ॥
उडा तोप से ! फूंक दिया घर, तब आगे को फौज बढ़ी ।
'यही इटावा' यहीं ! बनी है, उन वीरों की बलिशाला ॥

(७९)

लगी हाथ में गोली ! उसने; हाथ कलम ही कर डाला ।
फेंक दिया गंगा में सहसा, बोल उठा ! जय मतवाला ॥
अस्सी वर्ष का बूढा होगा, कौन 'कुँवरसिंह' सा नाहर ।
जिधर उठाई आख उधर बन, गई पलक में बलिशाला ॥

(८० [

कुवरसिंह मर गया अमरसिंह; हार गया जब दिलवाला ।
तब कब्जा जगदीशपुरा पर, अंग्रेजों ने कर डाला ॥
भरी तोप से ! लिपट गईं सब, और पलीता लगा दिया ।
राज महल को ! राजरानिया, बना रहीं थी बलिशाला ॥

(८१)

'भैणी साहब' मस्त हुये, पीकर ! आजादी का प्याला।
वह 'कूका विद्रोह' लगी थी, एक साथ उर में ज्वाला ॥
बांध तोप के मुंह से ! अडसठ, वीरों को हा ! उडा दिया।
'गुरू रामसिह' की वर्मा में, फिर खोली थी बलिशाला ॥

(८२)

भारतीयों का ! अहित 'हापकिंसन' ही था करने वाला।
देख देख कर जुल्म वीर के, जलती थी उर में ज्वाला ॥
भरी सभा में मार ! तमंचा फैंक, चढ गया फांसी पर।
बनी कनाडा अमरीका में, 'मेवासिह' की बलिशाला ॥

(८३)

है कोई ? हर दयाल सरीखा, आजादी का मतवाला।
हो सशस्त्र विद्रोह ! लगी थी, यही एक उर में ज्वाला ॥
इसी ध्येय पर तूने अपना, तन मन धन सब वार दिया।
तेरे ही ! पीछे जीवन भर, रही घूमती बलिशाला ॥

(८४)

हंस हंस कर ! तंग कोठरी, में भर बन्द किया ताला।
कितनों ही को, संगीनो से, बींध ! कुये को भर डाला ॥
वह 'कल्यादां बुर्ज' और, कल्यादां खूं 'अजनाले' का ॥
कौन भूल जायेगा ! जालिम, 'कूपर' तेरी बलिशाला ॥

(८५)

गीता गीता कहे न कहता, त्यागी त्यागी मतवाला।
लिप्त हुआ माया में भूला, अपने को भोला भाला॥
गीता से अमरत्व बरसता—है फासी के तख्ते पर।
खुदी छोड कर कभी न देखी, 'खुदीराम' की बलिशाला॥

(८६)

नीच 'रैंड' का अवसर पाकर, वीरों ने वध कर डाला।
मरने से कब कहा डरा है, अरे! अमर होने वाला॥
फासी पर चढ गये झूमते, एक साथ तीनों भाई।
वे 'चाफेकरबन्धु' कि अब तक, गुण गाती है बलिशाला॥

(८७)

भारतीय को भारत आने, पर प्रतिबन्ध लगा डाला।
दीवाने चल पडे झूमते, देश प्रेम का पी प्याला॥
'कोमागाता मारू' से जब, सब 'बजबज' में उतर पडे।
बोल उठे जय भारत, गोरे खोल रहे थे बलिशाला।

(८८)

सब से पहिले चढ फासी पर, निज कर से फंदा डाला।
ऊंचे स्वर से, फिर बोला 'करतारसिंह भोला भाला॥
यही एक अभिलाषा है! प्रभु, भारत को आजाद करूं।
चाहे कितनी बार देखनी, मुझेबलिशाला यह पडे॥

(८९)

मौका पा ! कूदा जहाज से, जब समुद्र में दिल वाला ।
सभी चकित हो गये और, खतरे का बिगुल बजा डाला ॥
बरस रही थीं गोली ! फिर भी, रहा तैरता देख चुका ।
यही 'वीर सावरकर' कितनी बार, न जाने बलिशाला ॥

(९०)

शस्त्र भरे है, गदर पार्टी, का जहाज आने वाला ।
पता चला जब अंग्रेजों को, इन्तजाम सब कर डाला ॥
तीनदिवस का भूखा फिरभी, अन्तिम दम तक खूब लड़ा ।
धन्य 'यतीन्द्र' मुकर्जी तेरी, बालेश्वर की बलिशाला ॥

(९१)

'लार्ड हार्डिङ्ग' पर देहली में, तुमने ही था 'बम' डाला ।
चला गया जापान ! आंख में, धूल झोंक कर दिल वाला ॥
'रास बिहारी बोस' तुम्हारा, सब प्रयत्न हो गया सफल ।
अपनी आंखों देख गये तुम, अंग्रेजों की बलिशाला ॥

(९२)

माता ! तुझसे एक शर्त पर, तेरा सुत मिलने वाला ।
मुख देखूंगा नहीं ! देख कर, मुझे अगर आंसू डाला ॥
हंसी खुशी से मिल माता से, फिर 'सत्येन्द्र' चढ़ा फांसी
वह बड़भागिन ! हंसते हंसते, देख रही थी बलिशाला ॥

(६३)

कोई विरला ही होता है, दानी ऐसे दिल वाला।
खुली न होगी ! खुले कहीं भी, जैसी खोली पौशाला॥
प्यास बुझाता हो प्यासे की, खाये सीने पर गोली।
कितनी श्रद्धा मयी बनी थी, 'श्रद्धानन्द की वलिशाला॥

(६४)

कठिन कठिन ! कहने से कुछ भी, सरल नहीं होने वाला।
खेल जान पर गया उसी ने, मुश्किल को हल कर डाला॥
साक्षात् ! साहस की देवी, धन्य धन्य ओ 'वीणा दास'।
दिखलाई बगाल गवर्नर को, तुमने ही ! वलिशाला॥

(६५)

सन्ध्या पूजा और हवन पर, जब प्रतिबन्ध लगा डाला।
आर्य मात्र के उर में भडकी, असतोप की तब ज्वाला।
बाध कफन ! सिर से दीवाने, सत्याग्रह को निकल पडे।
बना 'हैदराबाद' अनेकों; 'आर्यवीर' की वलिशाला॥

(६६)

अपनी 'सास्कृति' की रक्षा, करे न क्यों ? करने वाला।
सर्व सघ का गुरु 'गोलवल्कर' ने ध्येय बना डाला॥
उसे मिटा दो ! हिन्दू हो, या मुसलमान कोई भी हो।
खोल रहा जो ' अरे हमारी 'सास्कृति' की वलिशाला॥

(६७)

सुख से बैठा कौन ? किसी की, आजादी हरने वाला।
शाह 'अमानुल्ला' को धोका, देकर बेघर कर डाला॥
खूब किया मनमानी फिर भी, आखिर में फल वही हुआ।
देखी 'बचा-सक्का' ने भी, दो दिन पीछे बलिशाला॥

(६८)

देश प्रथम है ! पीछे मजहब, बोला 'हिटलर' मतवाला।
मरने दो 'ईसा मसीह' को, ठोंको गिरजा में ताला॥
हमने माना ! देश प्रथम है, लेकिन मानव धर्म बता।
मानव होकर ! मानवता की, खोल गया क्यों ? बलिशाला॥

(६९)

वह कागज का पटेबाज जो था अपूर्व लड़ने वाला।
स्टेलिन की अरे नाक में, था जिसने दम कर डाला॥
उसी वीर को तूने जालिम, हा ! भट्टी में झोंक दिया।
अरे ! हटीले हिटलर खोली, क्यों ? 'गोरिङ्ग' की बलिशाला॥

(१००

उससे बढ़कर कौन विश्व में, होगा पत्थर दिल वाला।
ठोक चुका है मजलूमों के, मुँह पर जो जालिम ताला॥
कौन सुने फरियाद ! जहाँ पर, होंठ हिलाना भी मुशकिल।
जिसने 'गर्दन' जरा उठाई, उसे 'दिखाई' बलिशाला॥

(१०१)

वह भी क्या ? राजों में राजा, निज कर्तव्य नहीं पाला ।
जिसने रैय्यत को सुत के सम, नहीं कभी देखा भाला ॥
पीडित दलितों मजलूमों का, बेगुनाह ! खूं चाट लिया ।
उसी जार की ! खुली, सरे-बाजार 'रूस' में बलिशाला ॥

(१०२)

डायर ! ओडायर का हमको, याद कारनामा काला ।
वही जुल्म की अन्तिम सीमा, बना तीर्थ 'जलियावाला' ॥
पिण्डदान करने कुटुम्ब का, उठो सभी ! 'पंजाब' चलें ।
नया राष्ट्र ! निर्माण करेगी, उन वीरों की बलिशाला ॥

(१०३)

बृटिश कफन की ! कील बनेगा, मेरे सीने का छाला ।
आगे बढ़ कर झूम गया, 'पंजाब-केसरी' मतवाला ॥
तू जाये लाहौर ! तो मस्तक, झुका चूम लेना भू को ।
मालरोड पर बनी हुई है, लाला जी ! की बलिशाला ॥

(१०४)

हिन्दू मुसलिम वैमनस्य की, भडक उठी सहसा ज्वाला ।
उसे बुझाने के हित उसने, खून पसीना कर डाला ॥
आँक सके क्या फिर भी कीमत, मजहब के अन्धे जौहरी ।
हा ! गणेश शंकर जैसे की, बना कानपुर बलिशाला ॥

(१०५)

जा प्रयाग में कुम्भ त्रिवेणी, न्हाता है क्या ! मतवाला ।
धर्म कर्म सब अरे ! वृथा हैं, जब तेरा है दिल काला ॥
पहिले जा 'अल्फ्रेड पार्क' में, होगा तीरथ तभी सफल ।
खेल गया 'आजाद' क्रांति की, आजादी हित बलिशाला ॥

(१०६)

यहीं ! रूप रानी के उर में, डाली 'मोती' ने माला ।
यहीं जवाहर की गोदी में, 'कमला' देती थी बाला ।
जीते जी जलगया ! देश हित, घर का वर ही दीवाना ।
आज वही आनन्द भवन है, 'नेहरू-कुल' की बलिशाला ।

(१०७)

ओर वही जो ! आन बान पर, होता है ! मिटने वाला ।
जिसने तिल तिल करके अपना, हो अरमान मिटा डाला ॥
अन्तिम दम पूछा 'यतीन्द्र' से, किसके बल पर था अनशन ।
देश प्रेम की हूक बढ़ाकर, भूख ! मिटाती बलिशाला ॥

(१०८)

रोशन सा दिल जला कौन है, लहरी सा विषधर काला ।
दीवाना 'अश्फाक' बनादे, सब को 'बिस्मिल' मतवाला ॥
फाँसी के तख्ते पर ! कीमत, आजादी की आँक गये ।
महा कृतघ्नी ! भूल जाय, जो उन ! वीरों की बलिशाला ॥

(१०८)

ना मुमकिन को ! मुमकिन कर, दिखलाता है करने वाला ।
जिसने सर रख लिया हाथ पर, उसने सब कुछ कर डाला ॥
कब से पीछे पड़ा हुआ था, दम लेकर ही दम छोड़ा ।
खुले खजाने 'उधमसिंह' ने, लदन खोली बलिशाला ॥

(११०)

'नेरू सिलम' वहीं पर समझो, काबा चुतरखाना आला ।
बौद्ध बिहार जैन मन्दिर औ, गुरू-द्वारा 'नानक' वाला ॥
कह भटकती फिरत पगली, आओ ! परिक्रमा करलें ।
'देसाई' कस्तूरा बा ! की, बनी-जहाँ पर ! बलिशाला ॥

(१११)

रोक सकी ! कब बूढी मा के, अन्तर की जलती ज्वाला ।
रोक सकी ! कब नव बाला के, नयनों से बहती हाला ॥
'चौरासी दिन' के अनशन से, 'चौरासी बन्धन' काटे ।
अमर 'हिमालय' की चोटी पर, 'देव-सुमन' की बलिशाला ॥

(११२)

भीष्म पिता मह सा व्रत धारी, था दिलेर ! वह दिल वाला ।
डाली आजादी ने जिसके, उर में खूब ! विजयमाला ।
पर-वाना बन कर दीवाना, हा ! अनन्त की ओर उड़ा ।
अरे ! दैव निर्दयी खोल दी, क्या ? सुभाष की बलिशाला ॥

(११३)

चली फौज ! आजाद हिन्द, पीकर आजादी का प्याला।
जीत लिया 'इम्फाल' जली, जनरल टोजो के उर ज्वाला॥
'रसद न भेजी' हाय किया, विश्वासघात ! जालिम तूने।
वही पाप ! बनगया अन्त, जापान देश की बलिशाला॥

(११४)

इधर उठा अफगान उधर, बङ्गाल मस्त था मतवाला।
काशमीर से रास कुमारी, तक फैली जीवन ज्वाला॥
बालक बूढे युवा युवतियाँ, बने देश के दीवाने।
अरे गुलामी की खोली थी, हमने जिस दिन बलिशाला॥

(११५)

'करो मरो' के मूलमन्त्र की, जाग उठी जिस दम ज्वाला।
तब गुलाम हिन्दोस्तान, जग उठा नीद से मतवाला॥
'बांध कफन' सिर से दीवाने, करने को बलिदान चले।
अट्टहास ! करती 'रणचण्डी' देख देख कर बलिशाला।

(११६)

कुछ दिन तक तो दुनिया ही से, इसे अलग था कर डाला।
अरे ! जहा 'चित्तू पांडे' का, रहा खूब शासन आला॥
कौन भूल जायेगा ! बोलो, बलिया का बलिदान अमर।
'बम' बरसा कर अंग्रेजो ने, जहा बनाई बलिशाला॥

(११७)

राजनरायण 'मिश्र' वही जो, खीरी का रहने वाला ।
आजादी के लियें गले में, फासी का फन्दा डाला ॥
पत्नी की ऑखों में आसू, देखे तो ! मुँह फेर लिया ।
अरी अभागिन ! हँसते हँसते, देख ! हमारी बलिशाला ॥

(११८)

हिन्दू मुस्लिम का फितूर, भर पूर दूर करने वाला ।
चला प्रार्थना प्रभु से करने, हुआ प्रेम में मतवाला ॥
'अनशन से यदि मरजाता तो, जगसेवा का क्या फल था ।
विश्व वद्य हे 'बापू' तेरी, अमर रहेगी बलिशाला ॥

(११६)

वह हिन्दू ! हिन्दू कैसा जो, नीच कर्म करने वाला ।
अपने ही हाथों से अपना, कर बैठा हा ! मुँह काला ॥
'हिन्दू' कहलाने वाले क्यों ? हिन्दू को बदनाम किया ।
बापू ! जैसे 'राष्ट्रपिता' की, अरे ! खोलकर बलिशाला ॥

(१२०)

हिंसा से हिसा बढती है, पियो प्रेम रस का प्याला ।
नफरत से नफरत को बस में, अरे ! कौन करने वाला ॥
'बापू' के हित अगर तुम्हारी, आखों मे कुछ 'ऑसू' हैं ।
बन्द लडाई करो न खोलो, हिन्दू मुस्लिम बलिशाला ॥

(१२१)

बना खाक का पुतला ! उसमें, नूर इलाही ने डाला।
लगी नहीं कुछ देर, एक दम खड़ा हो गया मतवाला॥
तू इंसा है ! कहा खुदा ने, 'यही बात' बस रखना याद।
मुझे भूलना और खोलना, नहीं किसी की वलिशाला॥

(१२२)

हजरत की उम्मत पर अपना, था ईमा लाने वाला।
जालिम 'शिमिर' बतादे फिर क्यों ! निकला तेरा दिल काला॥
पढते हुये नमाज ! खुदा के, बन्दों का सिर काट लिया।
'जंग कर्बला' बनी अली, हस्सन हुसैन की वलिशाला॥

(१२३)

बुरे कर्म करके, अच्छा फल, अरे ! कहा मिलने वाला।
सोचे समझे बिना अभागे, यह अनर्थ क्यों कर डाला॥
तू किस मुँह से है 'जन्नत' का, तलबगार बतला काफिर।
बना रहा दुनियां को दोजख, नित्य खोलकर वलिशाला॥

(१२४)

डाढ़ी चोटी के झगडे में, जीवन व्यर्थ गवॉ डाला।
खुराफात में फँस कर भूला, असिल बात को मतवाला॥
मुसलमान में बोल कमी क्या, हिन्दू में क्या लाल लगे।

(१२५)

मन्दिर तोड मुसलमा सहसा, बोल उठा अल्ला ताला ।
मसजिद फूंक और हिन्दू का, बजा शङ्ख घन्टा आला ॥
जान न पाये दोनों पागल, उसके नाम अनेकों हैं ।
किया धर्म बदनाम ! खोल, रहमान राम की बलिशाला ॥

(१२६)

नाच गया किसकी थापों पर, जिन्ना होकर मतवाला ।
किसके सगे हुये यह गोरे, रहा हमेशा दिल काला ॥
'क्रिप्स' लगाकर आग हिन्द में, सात समुन्दर पार गया ।
बजा रहा था 'चर्चिल' बगलें, देख हमारी बलिशाला ॥

(१२७)

खुद काफिर है ! अरे किसी को, जो काफिर कहने वाला ।
कहा सदाकत रह सकती है, जब तेरा है दिल काला ॥
जहॉ नहीं नफरत से नफरत, वह मजहब ! मजहब कैसा ।
धर्म एक है 'विश्व प्रेम' क्यों, खोल रहे हो बलिशाला ॥

(१२८)

बोल ! कहा से आता ! भारत के, टुकड़े करने वाला ।
नहीं देखने पड़ते दुर्दिन, और न जलती यह ज्वाला ॥
एक बार ही नहीं ! तुम्हारी, भूल सत्तरह बार हुई ।
राय पिथोरा ! हाय न खोली, क्यों 'गोरी' की बलिशाला ॥

(१२६)

हटा न ! मुल्ला और पुजारी, के दिल से पर्दा काला ।
कभी न मिलकर पीने देते, यह आज़ादी का प्याला ॥
छुरी, कटारी ! चल पड़ती हैं, जरा जरा सी बातों पर ।
मन्दिर, मसजिद बने आज क्यों, हाय ! परस्पर वलिशाला ॥

(१३०)

चूम 'सङ्गअस्वद' कावे में, क्यों तू मुल्ला मतवाला ।
हरिद्वार, काशी, प्रयाग में, लिये फिरै पंडित माला ॥
एक दूसरे को ! समझे हैं, काफ़िर ! यह दोनों काफ़िर ।
कुफ़ मिटाओ ! प्रेम बढ़ाओ, इन्हें दिखाओ वलिशाला ॥

(१३१)

आया है, रमजान ! हुआ क्यों, बे-ईमान मजहब वाला ।
दिन भर रहता ! याद खुदा में, फिर भी तेरा दिल काला ॥
अरे ! नमाजी कहाँ मिलेगी, तुझको जन्नत सोच जरा ।
दे अजान रोजे को—खोला, और खोल दी वलिशाला ॥

(१३२)

ईद, ईद ! क्या चिल्लाते हो, ईद मनाये दिल वाला ।
जिसने ! बेटे इकलौते को, बड़े नाज से हो पाला ॥
उसे खुदा के सदके ! अपने, हाथों ही से करे जिबाह ।
मुर्गे, बकरे, गाय, शुतर की, खोल रहे क्यों वलिशाला ॥

(१३३)

मीर, पीर, पैगम्बर ख्वाजा, और 'प्रानकलियर' आला।
देख चुका! काबा, बुतखाना, बोल! खुदा देखा भाला॥
अरे! खुदा के-बदों देखो, दिल में दिल की आखो से।
दुनिया भर की वहीं जियारत, जहाँ बनी हो बलिशाला॥

(१३४)

सच कहदे? 'आबेहयात' किसने तेरे मुंह में डाला।
अन्न खिलाकर! बडे चाव से है तुझको किसने पाला॥
जन्म भूमि! जननी के तू ने, कर डाले टुकडे टुकडे।
'पाकिस्तान' बना कर खोली, भारत माँ! की बलिशाला॥

(१३५)

पहिले ही से! था जालिम ने, सब सामान जुटा डाला।
किसे खबर थी! ऊपर से, उजला है लेकिन दिल काला॥
नर पिशाच! 'बीसवीसदी' के, हृदय-हीन सोहरावर्दी।
नोआखली! और त्रिपुरा की, याद रहेगी बलिशाला॥

(१३६)

नव युवती के! मात-पिता, भाई को बंधन में डाला।
फिर उस पर बालात्कार, करता था! जालिम मुँह काला॥
इतने पर भी! हुआ नहीं, संतोष! हाय! छाती काटीं।
वह अमानुषिक कर्म बने थे, मानवता की बलिशाला॥

(१३७)

किये ज़ब्त हथियार ! लगाया, फिर 'करफ्यूआर्डर' आला।
बेफिक्री से ! मस्त चला तब, मुसलमान दल मतवाला॥
सर्वस लूटा ! आग लगा ! मन माने अत्याचार किये।
मांग रहा था, भीक रहमकी, रहम देख कर बलिशाला॥

(१३८)

अपने कर से ! अपने घर में, अरे ! लगाई क्यों ज्वाला।
एक दूसरे से, लड़कर हा ! सर्वनाश ही कर डाला॥
जब तक रहे गुलाम ! मांगते रहे, नित्य हम आजादी।
अब होकर आजाद ! खोलदी, आजादी की बलिशाला॥

(१३९)

कहा ! फला फूला है कोई, अरे ! जुल्म करने वाला।
उसे जला कर खाक करेगी, उसके जुल्मों की ज्वाला॥
भारत रहा 'अखंड' रहेगा, यह 'भविष्यवाणी' मेरी।
पाकिस्तान ! आप ही अपनी, बन जायेगा बलिशाला॥

(१४०)

है कोई ! अपने को सच्चा, मुसलमान कहने वाला।
दिल पै रख कर हाथ बतादे, क्या कुरान देखा भाला॥
नग्न औरतों के ! दुनियां में, कहां निकाले गये जलूस।
तेरा पाकिस्तान ! बना, 'इस्लामधर्म' की बलिशाला॥

(१४१)

गर्भवती का ! गर्भ पात कर, जीवित-शिशु भूपर डाला।
टुकडे करके ! तला-तेल में, हसता था ! हंसने वाला ॥
उसके मात पिता के मुंह में, फिर वह 'तोहफा' ठूँस दिया।
बता ? जायका ! कैसा है ! यह, पूंछ रही थी बलिशाला ॥

(१४२)

जब देखा अब ! किसी तरह भी, धर्म नहीं बचने वाला।
स्वाभिमान को लिये ! इकट्ठी, हुई अनेकों नव-बाला।
नाम 'पद्मनी' का लेकर वह, सभी कुये में ! कूद पडीं।
जौहर जालिम देख रहे, जय बोल रही थी बलिशाला ॥

(१४३)

समझाया ! पर हाय ! न समझा, था उसका दिल ही काला।
कासिम रजवी ! 'रजाकार' दल—पर ईमां लाने वाला ॥
हुई जुल्म की अन्तिम सीमा, सह न सकी 'नेहरू सरकार'।
वह निजाम ! बनगया आप, अपने शासन की बलिशाला ॥

(१४४)

समझ गये सब ! जैसा तूने, पाकिस्तान बना डाला।
अब तेरे धोके में ! कोई, कभी नहीं ! आने वाला।
'काशमीर का शेर' शेख, अब्दुल्ला बोला छाती ठोक।
बढ़ आगे को ! ज़ालिम तेरी, मैं देखूंगा ! बलिशाला ॥

(१४५)

ईसा की ! जो गये शरण, वह मंत्र हुये बीसा आला ।
और खुदा के ! हो जाने से, जुदा कौन ? करने वाला ।।
जब तक चोटी है ! तब तक ही, यह ठुकराये जाते हैं ।
हा ! मानव के अधिकारों की, खोल रहे क्यों ? बलिशाला ।

(१४६)

तेरा ! इनका जिस्म एक सा, रंग रूप भी है आला ।
यह भी बेटे उसी पिता के, है जिसने ! तुझको पाला ।।
एक बाप की सन्तानें क्या; नहीं—प्रेम से रहती हैं ।
मिलो गले से ! और खोलदो, छूत छात की बलिशाला ।।

(१४७)

धर्म नहीं है ! अरे बर्फ है, छूने से गलने वाला ।
नहीं धर्म ! वह चीज जलादे, छूते ही जिसको ज्वाला ।।
इंसानों को ! इंसानों से, घृणा हुई यह कैसा धर्म ।
अरे अधर्मी ! क्यों न खोलता, हठ धर्मी की बलिशाला ।।

(१४८)

हमने माना ! यह निर्धन है, और बना तू धन वाला ।
यह निर्मल ! तेरा उर काला, वह निर्बल तू बल वाला ।।
पीड़ित की आहों से ! लेकिन, लोह भस्म हो जाता है ।
क्यों दुखियों की खोल रहा तू, अरे ! नित्य ही बलिशाला ।।

(१४९)

कहा गई वह हा ! भारत की, सुरवाला के सम वाला ।
जिसके उर में स्वाभिमान की, जलती थी प्रतिपल ज्वाला ॥
वहीं पतित हो गई ! विश्व में, था जिसका जीवन आदर्श ।
करैं 'भ्रूणहत्या' छिप छिपकर, नित्य खोलतीं वलिशाला ॥

(१५०)

नित्य नई ! सज, धज से घूमैं, बाजारों में नव-बाला ।
भारतीयता कहा अक्ल पर, पड़ा आज पर्दा काला ॥
अपराधिन से ! कभी न कहते, दोष लगाते ! गुण्डों को ।
फैशन के पीछे खुलती हैं, खुले खजाने वलिशाला ॥

(१५१)

पड़ा आख में आज ! धर्म के, ठेके दारों ! की जाला ।
'विधवा ब्याह' नहीं करने के, चाहे मरजाये वाला ॥
नाक न कटती जब गुण्डों के, संग दुखिया भग जाती है ।
अरे जालिमों ! क्यों विधवा की, खोल रहे हो वलिशाला ॥

(१५२)

सास, ससुर, देवर दुख देते, हुआ 'जेठ' का उर काला ।
नंद, जिठानी मास नोचती, लगा दिया मुंह पर ताला ॥
क्या सुख देखा इस जीवन का, क्या सुख देखा प्रीतम का ।
हा ! विधवा के लिये बना है, उसका घरही ! वलिशाला ॥

(१५३)

विधवा सेवा ! विधवा सेवा ! कह कर शोर मचा डाला।
ताल ठोक कर चढ़ा मेज पर, दिया लेक्चर क्या आला॥
मोज करैं ! दिल फेंक महाशय, 'त्यागमूर्ति' श्रीबिन्दा लाल।
कितनी विधवा बेच ! बनाई, आर्य धर्म की ! बलिशाला॥

(१५४)

बूढे के 'बधन' मे बाधी, हृष्ट पुष्ट सुन्दर बाला।
हा ! भविष्य को तूने उसके, नहीं कभी देखा भाला॥
जिसको चाहो उसे सौपदो, 'गाय' और बेटी का धन।
लालच के वस अरे नीच ! क्यों ? खोलरहा है बलिशाला॥

(१५५)

कभी उड़ाई, दूध मलाई, खोवा कभी बना डाला।
माखन खाया, दही जमाया, खीर बनाई क्या आला॥
अरे ! यही भारत माता है, माता सी जीवन दाता।
दया न लाते ! हाय ! खोलते, उसी गाय की बलिशाला॥

(१५६)

सर से ! पैरों तक 'चमड़े' की, वस्तु काम लाने वाला।
ऐसों ही ने ! 'गौ सेवा' का, सब आदर्श मिटा डाला॥
दस हिन्दू के घर में सुखसे, अगर एक भी गाय रहे।
यही सफल है, गौ-रक्षा न खुलै ! गाय की बलिशाला॥

(१५७)

किया वार्षिक उत्सव ! तब तो, उसको खूब सजा डाला ।
विद्वानों के हुये लेकचर, 'हवन-कुण्ड जागी ज्वाला ॥
शेष दिवस चिमगादड बन्दर, कुत्ते, गधे करें गदा ।
बनी हुई हैं हाय ! अनेकों, यज्ञशाला ही व.लेशाला ॥

(१५८)

प्रातः उठ कर ! आज 'आर्य' ने, हुक्के को देखा भाला ॥
चिलम उठाई ! आग जलाई, धू आधार मचा डाला ॥
बोल ! आत्मा दयानन्द की, क्या ? तुझको कहती होगी ।
ब्रह्म मुहूर्त में हाय ! खोलदी, यज्ञशाला की वलिशाला ॥

(१५९)

त्याग मूर्ति ! भगवान भजन में, सदा मस्त रहने वाला ।
उसे गडासे के प्रहार से, टुकडे टुकडे कर डाला ॥
छोड़ चुका घर बार, अरे ! तो फिर कैसे 'चेला-चेली' ।
क्या ? कारण था कौन बना, 'उड़ियाबाबा' की वलिशाला ॥

(१६०)

कपडे रग डाले तो क्या है, दिल तो है ! तेरा काला ।
बैठ जनाने घाट ! जपै क्या, राम नाम की तू माला ॥
आँखे तेरी ! कहीं लगी हैं, और भटकता हृदय कहीं ।
हाय ! गग के तीर खोल दी, 'राम नाम' की वलिशाला ॥

(१६१)

आग लगा ले ! जटा जूट में, फैंक 'कमण्डल' मृगछाला ।
जीता जल जा ! 'कर्मवीर' हो, कर्म-योग में मतवाला ॥
इससे बढ़ कर ! तपो भूमि क्या, तुझे मिलेगी दुनियाँ में ।
खाक रमाले ! रम जायेगी, रोम, रोम में बलिशाला ॥

(१६२)

जुआ खेलता ! रह। दिवाली, में भी तेरा दिल काला ।
हनूमान के रोट पूज कर, सारी निश फेरो माला ॥
करो प्रार्थना ! प्रभु से जीवन, सब विध सुखी हमारो हो ।
दीप जलाओ ! खुशी मनाओ ! खूब सजाओ ! बलिशाला ॥

(१६३)

आज अहिंसा परम धर्म को, भूल गया क्यों ? मतवाला ।
हुआ अन्ध-विश्वासी अंधा, कर्म कलंकित कर डाला ॥
अपना सर ही ! आप चढादे, ओ ! देवी के दीवाने ।
बकरे, भैसे की मन्दिर में, खोल रहा क्यों ? बलिशाला ॥

(१६४)

हा ! फैशन के दीवाने क्यों, अपना धर्म गवाँ डाला ।
सूत समझ कर फैंक रहा, हिन्दुत्व अरे हा ! मतवाला ॥
चोटी और जनेऊ की तू, कीमत उस 'औरंग' से पूंछ ।
जिसके पीछे ! खुली हजारों, की भारत में बलिशाला ॥

(१६५)

धन्य धन्य कर्जन साहब को, आज हमें कर-जन डाला।
डाढ़ी मूंछ मिटा कर रखदीं, सर पर क्या काकुल आला॥
जिसे प्रभु ! की शान और, पहचान मर्द की कहते हैं।
बडी शान से ! खोल रहें, नामर्द उसी की बलिशाला॥

(१६६)

किसका हो विश्वास कहा पर, जाये क्या जाने वाला।
जगन्नाथ, रामेश्वर में जब, गुण्डों ने फंदा डाला॥
मथुरा, काशी, तीर्थराज, हरिद्वार आदि देखे तीरथ।
चिड़ियाँ फाँसी और खोलदी, मन्दिर अन्दर ! बलिशाला॥

(१६७)

दर दर, मारे मारे फिरते, नवकुमार ! कोमल ! बाला।
सन्ताने दी बेच ! भूख की, बुझी नहीं फिर भी ज्वाला॥
दाने, दाने को ! मरदाने, दाँत निकाले फिरते थे।
था अकाल बंगाल प्रान्त में, या 'दानव' की बलिशाला॥

(१६८)

जीवित मात-पिता को तूने, पानी से तरसा डाला।
मर जाने पर, खुशी मनाई, अपना मूंड मुड़ा डाला॥
पिण्डदान ! क्या करता पापी, पिण्ड छुडाले जीवन से।
जीवन से जो ! पिण्ड छुडाये, आये मेरी बलिशाला॥

(१६९)

लैला देखी ! शीरी देखी, देखी 'मिसगौहर' आला।
हे 'अछूतकन्या' के पीछे, कोई पागल ! मतवाला ॥
क्या देखे टाकीज ! अरे नाचीज, बना पाकीज ख्याल।
थाम कलेजा ! कभी न देखी, आजादी की बलिशाला ॥

(१७०)

जगन्नाथ, रामेश्वर, पुष्कर, गौरी शकर, फिर डाला।
मथुरा, गोकुल, नन्दगाव में, है सब कुछ मिलने वाला ॥
पंडित होकर बना मूर्ख क्यों ? अपना हृदय विशाल बना।
उसी भूमि में सभी तीर्थ है, जहाँ रही हो बलिशाला ॥

(१७१)

अपना हृदय न शान्त कर सका, विश्व शान्ति करने वाला।
कर विवाह कन्या सम कन्या, से करता है मुँह काला ॥
रामकृष्ण का नाम किया, बदनाम अरे ! कह डाल ! मियां।
कितनी ! दुर्गा, रमा, सरस्वती, की खोलीं हैं बलिशाला ॥

(१७२)

राजा, राव, नवाब, सभी ने, था अन्धेर ! मचा डाला।
कभी प्रजा को प्रजा न समझा, रहा हमेशा दिल काला ॥
सङ्घ बना कर ! उन्हें सुपथ पर, लाया तू हे ! 'लौहपुरुष'।
'ताना शाही' शासन की, खोली 'पटेल' ने बलिशाला ॥

(१७३)

कोई कहता ! पलक बिछाकर, तुझको आँखों में पाला।
कोई कहता ! नहीं मिलेगा, मुझसा हम दम दिल वाला ॥
अरे ! पाप के बाप लोभ का, चढ बैठा ! जब सिर भूत।
'जर ज़मीन ज़न' के पीछे हा, खुली न किसकी वलिशाला ॥

(१७४)

तेरे कर्मों ही ने ! तुझको, इतनी आफत में डाला।
हमने माना ! रहा न कोई, तेरा हम दम दिल वाला ॥
पेशानी पर ! शिकम न लाना, और न करना कुछ भी गम।
दुनियाँ जिसको ठुकराती है, गले लगाती ! वलिशाला ॥

(१७५)

राग, रंग में कभी मस्त है, कभी ठाठ शाही ! आला।
कभी निराशा है ! जीवन से, कभी जला है दिलवाला ॥
उछल, डूब ! संसार सिन्धु में, क्यों तू ! गोते खाता है।
एक 'वार में पार' लगा, देती है मेरी वलिशाला ॥

(१७६)

हवा ! हवा करके छोडेगी, खाक ! वना देगी ज्वाला।
पानी औ मिट्टी में ! मिलकर, रहा शून्य चक्कर वाला ॥
पाँच तत्व से ! तुझे रचा है, यही तत्व दें ! तुझे मिटा।
कहाँ जायगा वच कर पापी, है पग पग पर वलिशाला ॥

(१७७)

देख, देख, कर फूल रहा है, माया में दिल का काला।
तेरा यह सब, कुटम-कबीला, नहीं काम आने वाला ॥
मोह त्याग ! है सब को मरना, कर्म-वीर ! गाई गीता।
खोल गया ! अर्जुन कुटम्ब की, कुरुक्षेत्र मे बलिशाला ॥

(१७८)

चूस चूस कर खून ! गरीबों, का यह भवन बना डाला।
बडे गर्व से ! क्या गद्दी पर, मूंछ मरोड़े मतवाला ॥
कभी न सोचा ! आँख मिचैंगी, ठाट पड़ा रह जायेगा।
जरा देर' के सुख को तूने, खोली कितनी ! बलिशाला ॥

(१७९)

हिन्दू मुसलिम सिक्ख ईसाई, कोई भी हो मत-वाला।
जात पाँत औ छूत छात का, यहाँ नहीं ! परदा काला ॥
इसी घाट से ! राजा उतरे, यही रंक के लिये खुला।
भेद भाव को भूल ! सभी को, एक बनाती बलिशाला ॥

(१८०)

'मृगनयनी' को छोड़ ! अरे तू, दाब बगल में मृगछाला।
आसन मार ! बैठ मरघट में, वीर मुण्ड की ! ले माला ॥
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का तू, जाप किये जा ध्यान लगा ॥
तब जग के कण कण में तुमको, दीख पड़ेगी बलिशाला ॥

(१८१)

जग में रह कर, जग चक्कर से, दूर सदा ! रहने वाला।
अपने को पथ एकाकी पर, जिसने आप मिटा डाला।
भूख-प्यास की उसे न चिन्ता, रक्त पान निज करता है।
वही श्रेष्ठ है ! इच्छाओं की, जिसने खोली बलिशाला ॥

(१८२)

किसका खून बहा कर ! प्रातः, आती है ऊषा-बाला।
किसका खून बहा कर ! सन्ध्या, पीती भर कर प्याला ॥
निशा मिटाकर सूरज निकला, सूरज छिपा ! निशा आई।
दिवस रात की रात दिवस की, खुली परस्पर बलिशाला ॥

(१८३)

किस का मुँह पकडा जाता है, जो चाहा सो कह डाला।
दिल पै रख कर हाथ जरा तो, सोचे कोई दिल वाला ॥
जिसे समझते जुल्म ! यही है, मूल मन्त्र आजादी का।
'रूह जिस्म में कैद' उसे आजाद ! बनाती बलिशाला ॥

(१८४)

हे भगवान ! हवा कैसी है कैसी यह ! जागी ज्वाला।
मानव ही मानव के खूं का, हुआ आज पीने वाला ॥
निर्बल के निर्बल सीनों पर, बलवानो के होते जुल्म।
दीनबन्धु ! क्यों देख रहे हो, दीनबन्धु की बलिशाला ॥

(१८५)

जीवमात्र को ! अपना समझे, 'विश्वप्रेम' का पी प्याला ।
राग द्वेष से रहित ! श्रेष्ठ हैं, जीवन सफल बना डाला ॥
हिन्दू होना पाप नहीं है ! यदि 'विशाल' हो शुद्ध हृदय ।
हृदय संकुचित ! ही बन जाता, हिन्दूधर्म की बलिशाला ॥

(१८६)

जीवन को आदर्श बनाये, विश्व प्रेम का ! पी प्याला ।
'हिम्मत मरदां' मदद खुदा का, सदा गान करने वाला ॥
ताल ठोक कर ! चढ़ जाये जो, अमर ध्येय की सीढ़ी पर ।
वहीं तीर्थि बनता है पहिले, करती मेरी बलिशाला ॥

(१८७)

पर हित जो ! पीड़ा सहता है, होता कोई ! दिल वाला ।
है आनन्द ! उसी में उसको जीवन सुखद बना डाला ।
जग में जितने हुए सुधारक, अब हैं, या आगे होंगे ।
चलैं 'धार पर' तब सुधार का, पाठ पढ़ाती बलिशाला ॥

(१८८)

सेज बिछाई ! चुन चुन कलियाँ, सोता है ! सोने वाला ।
क्या सुहाग को अर्द्ध निशा में, सब अरमान मिटा डाला ॥
जिस बाला के ! फंसा प्रेम में, यही अभागिन रोयेगी ।
खोलेगा 'यम' इसी पलङ्ग पर, जिस दिन तेरी बलिशाला ॥

(१८९)

यह कुटुम्ब ! धन, धाम कहाँ है, अरे ! साथ जाने वाला ।
जिसके पीछे तूने ! पागल, क्या अनर्थ न कर डाला ॥
नित्य देखता है ! तू फिर भी, जान बूझ कर फसता है ।
'जग जाने' पर ही यह जग है, सो जाने पर बलिशाला ॥

(१९०)

तू जितना करता है ! उतना, ही तुझको मिलने वाला ।
देख पराई चिकनी चुपडी, जली हृदय में क्यों ज्वाला ॥
है मजहब' बदनाम ! लड़ाई, दुनिया में 'रोटो' की है ।
भरा नहीं भर सके ! पेट ही, बना विश्व की बलिशाला ॥

(१९१)

जितना ऊँचा ! उठना चाहे, उठ जाये उठने वाला ।
नभ चूम्बी इन प्रासादों को, अन्त गर्त ही में डाला ॥
जहाँ हिमालय आज खडा है, वहा सिन्धु लहराता था ।
लेती है जब 'करन्वट' धरती, खुलजाती है बलिशाला ॥

(१९२)

आज पतन की ओर चला, इन्सान हुआ क्यों मतवाला ।
सोच रहा है ! विश्व नाश का, नित उपाय दिल का काला ॥
बना लिया 'एटमबम' तूने, अपने लियें बनाया क्या ?
'अमर न क्यों होगया' देखनी, तुझे न पड़ती बलिशाला ॥

(१६३)

तर्क, वितर्क, बढ़ाकर तूने, अपना ज्ञान गवॉ डाला।
दुनियॉ क्या है! इसे समझता, है कोई! किस्मत वाला॥
अरे! कभी 'मरघट' में जाकर, सुना नहीं! 'प्रलयंकर' गान।
ब्रह्म सत्य है! और सत्य है, विश्व नहीं! यह वलिशाला॥

(१६४)

है पूरा जंजाल! जगत, माया का, जाल बिछा डाला।
निकल जाय फंदे से! ऐसा, कौन? मिलेगा दिल वाला॥
आवागमन इसे कहते! मैं, मर मर कर! जी उठता हूँ।
अभी देखनी मुझको! कितनी, बार न जाने! वलिशाला॥

(१६५)

सोना, चॉदी, तॉबा, पीतल, रङ्ग सभी का था काला।
खूब तपाये गये! आग मे, तभी मिला रुतवा आला॥
'कोहनूर' जिसको! जग कहता, क्या है' पत्थर ही तो है।
पत्थर को! हीरा, मोती, पुखराज बनाती वलिशाला॥

(१६६)

खिसक हिमालय पड़े! सिन्धु में, लगजाये भीषण ज्वाला।
गिरें! टूट 'नक्षत्र' भूमि नभ, टुकडे टुकड़े कर डाला॥
साक्षात! 'भगवान-रुद्र' का, अरे! तभी दर्शन होगा।
ऊँचे स्वर से! जब प्रलयंकर, गान करेगी! वलिशाला॥

(१९७)

दान, धर्म, क्या ? खाक़ करेगा, अब कोई करने वाला।
पाप, पुण्य कुछ नहीं! वृथा ही, जग को चक्कर में डाला॥
परम भक्त 'बापू' का जिसको, दानवीर जग कहता है।
उस 'बिड़ला'का! भवन बना, फिर क्यों बापू की बलिशाला॥

(१९८)

सुलग रही है! अरे लगेगी, अभी और भीषण ज्वाला।
जब तक 'एटमबम' है! तब तक, नहीं चैन मिलने वाला॥
मानवता को भूल! विश्व के, सिर पर है 'शैतान' सवार।
सोच रहा है! एक बार, दिल भर कर! खोलूँ बलिशाली॥

(१९९)

करले कुछ शुभ कर्म अरे क्यों, जीवन व्यर्थ गवा डाला।
अकस्मात्! ही चला जाय तू, सदा नहीं रहने वाला॥
'पैदा सो! ना पैद' एक दिन, आगे पीछे सब ही को।
जैसी जिस विध जहाँ लिखी है, पड़े देखनी! बलिशाला॥

(२००)

महापुरुष! जो भी जब आया, जग को समझाने वाला!
निष्ठुर जग ने! उसे न जाने, किस किस विपदा में डाला॥
अपनी अपनी कह कर कितने, चले जायगे! चले गये।
बनी रहेगी! पागल दुनिया, बनी रहेगी! बलिशाला॥

(२०१)

निज वल पर हो खडा किसी का, मुंह क्यो ? तकता मतवाला।
ठंडे दिल से सोच! जरा तू, रहा सदा ! भोला भाला ॥
ऐसा कौन? उदार विश्व में, विना स्वार्थ का साथी कौन।
समय पडे पर! कभी न चूके, तुझे दिखाये ! वलिशाला ॥

(२०२)

क्यों? कोई घर वार ! छोडता, क्यों! कोई जपता माला।
किसे पडी थी! पर सेवा हित, अपना सर्वस दे डाला ॥
दुख हीं से तो! अरे देख ले, सुख का अनुभव होता है।
सच कहता हूं! लोक और, परलोक वनाती ! वलिशाला ॥

(२०३)

कहीं ! 'धर्मशाला' बनवाई, कहीं वनाई ! पौशाला।
'विधवासघ' 'अनाथालय' में, कृष्ण-कीर्तन गौशाला ॥
कभी भीतरी भेद! न देखा, इन गुण्डों के अड्डों का।
अरे ! धर्म के पर्दे में क्यों ? खोल रहे हो ! वलिशाला ॥

(२०४)

'मीरा' औ 'चैतन्य' प्रभो का, सव उद्देश मिटा डाला।
नाच कूद कर गुण्डों के संग, करें 'कीर्तन' नवबाला ॥
यही गर्भ! धारण होते हैं, यहीं! निवारण भी होते।
जग कहता 'गोविन्दभवन' है, मैं कहता हूं ! वलि

(२०५)

क्या ? आवश्यकता है ! फिर क्यों. 'हिन्दूकोड' बना डाला।
प्रभु ही जाने ! इसके बिन, है कौन ? आहित होने वाला ॥
अगर पास ही करना है ! तो, हिन्दू शब्द लगाते क्यों ?
क्या तलाक से नहीं खुलेगी, 'आर्यधर्म' की बलिशाला ॥

(२०६)

कौन मिलेगी ! पति चरणों पर, जीवन अर्पण कर डाला।
कौन मिलेगा ! पत्नी को, जीवन सङ्गिनि कहने वाला ॥
कभी परस्पर ! प्रेम न होगा, बनी रहेगी यह शङ्का।
कब 'तलाक' दे हाय ! खोलदे, कहीं न मेरी बलिशाला ॥

(२०७)

बेटी का सम भाग ! पिता की, सम्पति में जब कर डाला।
हैं जितने हकदार ! जलेगी, नित उनके उर में ज्वाला ॥
बहिन भाई के ! शुद्ध प्रेम का, होगा महा भयंकर रूप।
'भैयादूज' न होगी ! होगी, बहिन भाई की बलिशाला ॥

(२०८)

भारतीय नारी का ! जग में, हो जायेगा मुँह काला।
था जिसका जीवन महान, हा ! उसे गर्त में क्यों डाला ॥
सीता, द्रोपदि, सावित्री का, क्या ? आदर्श मिटाओगे।
ज़रा ज़रा सी बातों पर ! दिन रात खुलेंगी बलिशाला।

(२०६)

अब देखेगा! सबसे पहिले, यह विवाह करने वाला।
जिसके भाई बहिन नहीं हों, वह लड़की सबसे आला॥
कुछ दिन पीछे! मिलै ससुर का, माल दूसरा ब्याह करूँ।
इसको दे दूँगा 'तलाक' या, दिखला दूँगा बलिशाला॥

(२१०)

कुछ दीवानी! दीवानों पर, चढा विदेशी रङ्ग आला।
तभी 'भारती-संस्कृति' पर, आंख मींच! पानी डाला॥
उनसे हम क्या कहें! भले ही, वह कितने ही! ब्याह करे।
निश दिन खुलती रहे परस्पर, पति-पत्नी की बलिशाला॥

(२११)

जलते दीपक पर! हर कोई जल जाता जलने वाला।
बुझे दीप पर! प्राण निछावर, कर देती भारत-बाला॥
पतिव्रता का अरे! विश्व में, कहीं कोई न उदाहरण।
उसी 'पतिव्रत' की खोलोगे, क्या 'तलाक' से बलिशाला॥

(२१२)

नहीं उचित यह नीत! कि-जबरन कोई नियम बना डाला।
सच कहता हूं! असन्तोष की, भड़क उठे! भीषण ज्वाला॥
किसी धर्म पर! नहीं करैं, आघात नीति वह गई कहाँ।
'हिन्दूकोड' न होगा! होगी, 'आर्यधर्म' की बलिशाला॥

(२१३)

देश प्रेम की ! जिसके उर में, कल तक जलती थी ज्वाला ।
आज वही बन गया, हाय ! 'परमिट' पर मरमिटने वाला ।।
बाप मरा था ! बिना कफन के, बेटा आज 'बजाज' बना ।
करै 'ब्लैक' मनमाना चाहें, अमन रहे ! या बलिशाला ।।

(२१४)

घूसखोर औ चोर ! जहाँ हो, इन्तजाम करने वाला ।
फिर कैसा इन्साफ ! कि जिसका, दिल पहिले ही से काला ।।
'कांग्रेस' को ! बस ऐसे ही, गुण्डों ने ! बदनाम किया ।
हाय न क्यों ? सरकार खोलती, इन 'दुष्टों' की बलिशाला ।।

(२१५)

मैं लीडर हूं ! किसका डर है, जो चाहा सो ! कर डाला ।
है अपनी 'सरकार' मुझे फिर, रहा कौन ? कहने वाला ।।
देश, धर्म में ! लगे आग, मैं 'उल्लू' सीधा करता हूं ।
जो बोला विपरीत ! उसी को, दिखला दूँगा ! बलिशाला ।।

(२१६)

आज 'नुकीली' गांधी टोपी, खद्दर का कुर्ता आला ।
कल था ! अंग्रेजों का पिट्ठू, यही जुल्म करने वाला ।।
गङ्गा जी पर ! गङ्गाधर है, यमुना जी पर ! यमुनादास ।
इस 'अवसरवादी' लीडर को, अरे ! दिखादो बलिशाला ।।

(२१७)

कोई कहता 'दलितवर्ग' की. मैं सेवा करने वाला।
कोई कहता 'देश, धर्म' हित, मैंने सर्वस दे डाला॥
सङ्घ, अकाली, सोशलिस्ट, क्या ? कम्यूनिस्ट, गाधीवादी।
जनता के सिर 'भूत' चढा कर, खुलवाते हैं बलिशाला॥

(२१८)

किसी किसी 'एम. एल. ए' ने तो, है अन्धेर ! मचाडाला॥
रँङ्गा हुआ यह 'स्यार' बना है, तीस मारखा ! का साला॥
'रामराज्य' का स्वप्न देखते, उधर 'जवाहरलाल, महान।
इधर खोलता। यही धूर्त हा ! रामराज्य की बलिशाला॥

(२१९)

डांक, तार, क्या रेल आदि पर, मैंने काबू कर डाला।
ज़ब चाहूं ! पूंजीपतियों की, मिल मे ! ठुकवादूँ ताला॥
'मजदूरों के। बल पर' ही तो, उड़ा रहा मैं गुलछर्रे।
अभी करा 'हड़ताल' दिखादूँ, बडों बड़ों को बलिशाला॥

(२२०)

आजादी मिल गई ! हमारा, फिर भी हाय ! हृदय काला।
करो देश उत्थान ! सभी मिल, पियो प्रेम रस का प्याला॥
है अपनी 'सरकार' इसे ! मजबूत, बनाना सबका धर्म।
जो इसकी जड़ करै खोखली, उसकी खोलो ! बलिशाला॥

(२२१)

कौन मिलेगा ! शुद्ध हृदय से, जग सेवा ! करने वाला ।
पद की इच्छा ! उसे न परहित, जिसने सर्वस दे डाला ॥
आत्म शान्ति के हित सेवा है, सेवा कुछ व्यवसाय नहीं ।
सेवक हो तो ! फिर क्यों ? सेवा, वनी परस्पर वलिशाला ॥

(२२२)

पद के लिये ! चुनाव ठाठ से, लड़ता है लडने वाला ।
यह क्या ? सेवा खाक करेगा, पहिले ही से दिल काला ॥
अरे ! नोट में वह ताकत है, मुर्दे भी दे जाते वोट ।
फूट गये कितनों के सिर ! वन गया 'इलेक्शन' वलिशाला ॥

(२२३)

सभी वस्तु पर ! इसीलिये था, अरे ! नियन्त्रण कर डाला ।
सबको सुविधा रहे ! कहीं भी, लगे न दुविधा की ज्वाला ॥
किन्तु ! स्वार्थी दुनियां इसके, कव महत्व, को जान सकी ।
राशन के शासन में ! बोलो, खुली न किसकी वलिशाला ॥

(२२४)

नई, नई, सस्था ! खोलकर ! जग को धोखे में डाला ।
वना लिया है ! 'धन्धा' घूमें, चन्दा चट करने वाला ॥
'ध्येय नहीं कुछ भी 'जीवन' का, वे पैंदी के लोटे हैं ।
उडा रहे हैं मौज ! खोल कर, दान-धर्म की वलिशाला ॥

(२२५)

देश, धर्म को छोड़ ! खोलता, कोई पागल ! मधुशाला ।
भूल गया अपने को यह क्या, जान सकेगा मतवाला ॥
है कोई ! देखेगा दिल ! दिलवाला उन दिलवालों का ।
शीश चढा कर, अरे ! जिन्होंने, अमर बनाई बलिशाला ॥

(२२६)

क्या ? जीवन भर ! लिये फिरेगा, दर दर पर ! खाली प्याला ।
तेरी तृष्णा ! नहीं मिटेगी, कितनी ही ! पीले हाला ॥
अरे शराबी ! बाँध 'कफन' सिर, मेरे पीछे पीछे चल ।
भूल जायगा ! मधुशाला को, अगर देखली ! बलिशाला ॥

(२२७)

गला घोट दे ! मधु-बाला का, चूर ! चूर ! करदे प्याला ।
तली तोड़ ! मधुघट की पागल, बह जाये सारी हाला ॥
कान पकड कर 'तोबा' करले, परमपिता से ! माँग क्षमा ।
तुझे सूझती ! मधुशाला, खुल रही देश में ! बलिशाला ॥

(२२८)

सुरा ! शराबी का जीवन है, मेरा जीवन है ज्वाला ।
उसकी प्यारी 'मधुबाला' है, मेरी आश 'कृषक-बाला' ॥
वह देता है ! निशा-निमन्त्रण', उषा-निमन्त्रण मैं देता ।
झूम रहा ! वह 'मधुशाला' में, घूम रहा ! मैं बलिशाला ॥

(२२६)

कान लगाकर क्या ? सुनता है, बोतल की कुल २ आला।
मधुबाला को ! लिये बगल में, क्या बैठा है ! मतवाला ॥
बेटे का ! कर्तव्य यही क्या, दुनिया मुंह ! पर थूकेगी।
मस्त पड़ा तू ! मधुशाला में, खुली मात की बलिशाला ॥

(२३०)

रंगे हाथ ! कातिल आया है, लिये रक्त-रंजित माला।
ध्यान लगाये, सीना ताने, खडा 'अमर' होने वाला ॥
एक लात में ! जिस पागल का, नशा दूर हों जाता हो।
ध्यान लगाना ! वह क्या जाने, ध्यान लगाती बलिशाला ॥

(२३१)

क्यों ? मसजिद में गया ! अरे तू, जब है मय पीने वाला।
क्यो ? मन्दिर में गया ! हाथमें, लिये लबालब मय प्याला ॥
क्यों कहता है ! कहीं ठिकाना, मिला न मुझसे काफिरको।
अगर प्राश्चित ! करना है तो, बुला रही है बलिशाला।

२३२)

बोतल खाये जब पछाड, रोयेगा सिर धुन कर प्याला ॥
तेरे दिल की ! धड़कन को, जब देखेगी साकी वाला।
नशा उडेगा ! हाथ मलेगा, और कहेगा 'बुरा' किया।
'मधुशाला' ही पागल ! तेरी, बन जायेगी 'बलिशाला' ॥

(२३३)

'सोम-सुधा' को सुरा वताये, पड़ा अक्ल पर ! क्या पाला ।
'द्रोण-कलश' को मधुघट कहता, हुआ नशे में मतवाला ॥
सुरा पान का ! कहाँ समर्थन, वेदों ! को वदनाम न कर ।
अरे ! असुर क्यों ? खोल रहा है, दिव्यज्ञान की वलिशाला ॥

(२३४)

वने रहेंगे ! मन्दिर जिनमें, नित्य जपी जाये माला ।
वनी रहेंगी ! मसजिद जिनसे, सदा आये 'अल्ला-ताला' ॥
है भारत आजाद ! देखले, आँख खोलकर ओ ! काफिर ।
सभी जगह खुल रही ! खुलैंगी, मधुशाला की वलिशाला ॥

(२३५)

सत्य वात है ! सागर-मंथन से, जग में आई हाला ।
लेकिन ! इतना तो वतलादे, कौन 'देव' पीने वाला ॥
'सुधापान' कर ! अमर हुये सुर, असुर ! सुरा में डूव गये ।
'देवासुर' संग्राम ! वना, तेरे ! 'पुरखों' की वलिशाला ॥

(२३६)

हमने माना ! शौक स्वाद के, हित है ! जग पीने वाला ।
भूल जाय ! दुख-मय जीवन, तू ! इस कारण पीता हाला ॥
रोगी वन कर ! क्यों ? जीता है, 'मर्ज रहे' न रहे मरीज ।
पी ! आवेशमशीर ! भुलाये, दुख-मय जीवन वलिशाला ॥

(२३७)

'यम' आये ! जब लेने को, तब ! काम नहीं देगी हाला !'
अधरों पर ! लगने से पहिले, छूटजाय कर से प्याला ॥
तेरी आंखें ! तभी खुलें ! जब, साकी ! आख चुरायेगा ।
देखेगा ! जिस ओर ! दिखाई, देगी तुझको ! बलिशाला ॥

(२३८)

मार छुरी ! अपने अधरों में, बना 'ओख' का ले प्याला ।
मैं भी तो लूं देख ! अथक है, कैसा तू पीने वाला ॥
बदनामी से डर कर ! पागल, जग को क्यों ? देता है दोष ।
टूट गया जिसका दिल ! उसकी, एक दवा है बलिशाला ॥

(२३९)

जड़ काटो ! अंगूर लता की, जिससे बनती हो हाला ।
आग लगादो ! उस मिट्टी में, जिसका बनता हो प्याला ॥
हाथ तोड़ ! डालो साकी के, गला शराबी का दाबो ।
उठ ! भारत सन्तान खोल अब, दुर्व्यसनों की बलिशाला ॥

(२४०)

चाट रहे कुत्ते ! मोरी में, दिये पडा ! मुंह मतवाला ।
बड़े चाव से ! वही खारहे, ओक ओक कर जो डाला ॥
उतर जाय ! वह नशा नहीं है, यहा नशा है जीवन का ।
हमने देखी ! मधुशाला, तू देख ! हमारी बलिशाला ॥

(२४१)

चाह नहीं है ! मेरे गल में, डाले 'सुर-बाला' माला।
चाह नहीं है ! मुझे पिलाये, जी भर अमृत का प्याला॥
चाह यही है ! मानवता के, चरणों पर दूं ! शीश चढा !
रहे देखती ! आंख उठाये, दुनियां मेरी बलिशाला॥

(२४२)

मेरे आगे ! क्या गायेगा, आये तो ! गाने वाला।
एक 'भारती' की वीणा है, बाकी साज ! जला डाला॥
बेगाना ! गाना समझेगा, मस्ती समझे ! मस्ताना।
मेरी लय में ! महाप्रलय है, जालिम ! समझे बलिशाला॥

(२४३)

खबरदार ! जो मेरे ऊपर, अगर किसी ने ! रंग डाला।
रंगा हुआ हूँ ! मुझ पर कोई, रग नहीं ! चढने वाला॥
देश, धर्म के ! दीवानों की, जलती पग पग पर होली।
जिस दिन चाहूँ ! चला जाऊँगा, फाग खेलने बलिशाला॥

(२४४)

आगे ही ! रो लेवै, हो कोई ! रोने वाला।
खबर दार ! जो मरजाने पर, अगर कहीं ! आँसू डाला।
याद रहे तो ! इतना करना जिससे सब को याद रहे।
बने समाधि ! वहीं पर मेरी, जहाँ बनी हो ! बलिशाला॥

(२४५)

'तुलसीदल' को डाल । पिलाया, मुझको गंगा जल प्याला ।
दुआ, फातहा, दान, पुण्य । भी करे खून । करने वाला ॥
मेरे मुह में अरे । डालदो, अब तो । उस 'मतलज' की रज !
जिसके तट पर । बनी हुई है, 'भगतसिंह' की बलिशाला ॥

(२४६)

वही ! लाश को । हाथ लगाये, जिसके हो । कर में छाला ।
मेरी ! अर्थी में, घायल ही, हो 'कधा' देने वाला ॥
जिसके दिल में । आग लगी हो, वही चिता मेरी फूंके ।
कर्म करे । तो बाँध कफन सिर, जाये सीधा बलिशाला ॥

(२४७)

मेरा श्राद्ध । करै तो कोई, हो ऐसा ! करने वाला ।
देश धर्म और पर हित के हित, जिसे जलाती हो ज्वाला ॥
मास नोंच । निज कर से अपना, काक गिद्धका भोज करै ।
ऐसी खोले । जैसी खोली, 'शिव-दधीच' ने बलिशाला ॥

(२४८)

गर्म रक्त से । मेरा तर्पण, हो कोई करने वाला ।
'सहस-बाहु' का 'परशुराम' ने, जैसे वंश मिटा डाला ॥
तृप्त आत्मा होगी मेरी, कहीं । जुल्म का नाम न हो ।
जहाँ मिलें ! कोई भी जालिम, वहीं खोल दो ! बलिशाला ॥

(२४९)

हिन्दू हो ! या मुसलमान ! या, और किसी मजहब वाला ।
जो भी जुल्म करै ! जालिम है, करदो उसका मुंह काला ॥
मैं मानव हूं ! बस मानव की, यही एक 'परिभाषा' है ।
करै विश्व कल्याण' और, खोलै 'जुल्मों' की बलिशाला ॥

(२५०)

जो कुछ समझा मैंने उतना, वीरों का यश ! लिख डाला ।
क्षमा करो अपराध ! भूल है, नहीं ! न मेरा दिल काला ॥
रहे शेष जो ! उनकी पदरज, निज मस्तक पर धरता हूँ ।
देश धर्म हित खोल चुके ! या, देख चुके ! जो बलिशाला ॥

(२५१)

बलिशाला पढ कर भी उर में, अगर नहीं जागी ज्वाला ॥
उस पाषाण हृदय से ! फिर क्या ? कह सकता कहने वाला ॥
देश धर्म हित ! मर कर होना, अमर किसी ने यदि सीखा ।
युग युग तक उस महावीर का, गुण गायेगी ! बलिशाला ॥

(२५२)

देश धर्म औ, पर हित के हित, जिसे जलाती हो ज्वाला ।
इसी ध्येय पर ! हंसते हंसते, झूम गया ! जो मतवाला ॥
छोड़ गये 'स्मृति' विश्व में, अमर हुई 'गाथा' जिनकी ।
उन्ही ! महापुरुषों के अर्पण, करूँ उन्ही की बलिशाला ॥

(२५३)

हमने माना तूही ! जग का, है ! पालन करने वाला ।
झूंठ नहीं है ! तूने ही यह, सब ससार वना डाला ॥
तू सब कुछ है ! पर यह दुनिया, तुझे न लाती आंख तले ।
तेरा नाम ! न लेता कोई, अगर न होती ! वलिशाला ॥

(२५४)

पत्ता भी ! तेरी सत्ता के, विना नहीं हिलने वाला ।
नाच रही है ! दुनिया जैसा, तूने नाच नचा डाला ॥
अपने अपने कर्मों को सब, भोग रहे हैं ! किसका दोष ।
माया के चक्कर में पडकर, वना हुआ जग ! वलिशाला ॥

(२५५)

दया, क्षमा, सतोप, प्रेम है, कहाँ ! सभी का दिल काला ॥
जीव मात्र का जीव मात्र, वनगया खून पीने वाला ॥
मानव ! तुझको भूल ! समझ वैठा है, अपने को सव कुछ ।
खोल रहा है ! वडे गर्व से, निर्दोषों की ! वलिशाला ॥

(२५६)

तेरे सम हे ! दया सिन्धु है, कौन ? दया करने वाला ।
दो ऐसा ! वरदान' प्रेम का, पिये सभी मिलकर प्याला ॥
फूलें, फलें स्वदेश ! ज्ञान, वल, विद्या से ! धन धान्य वढ़ें ।
विकल सुखी सवभाँति रहें ! अव खुलें दुखों की वलिशाला ॥

❀ अन्तर्कथायें ❀

(५) एक वार शिव ने पार्वती के पिता दक्ष प्रजापति को भरी सभा में यह समझ कर नमस्कार नहीं किया कि—यह तो हमारे ससुर हैं। दक्ष इसी बात पर इतने असन्तुष्ट हुये कि उन्होंने अपने यहाँ यज्ञ में शिव को नहीं बुलाया। पार्वती अपने पति का अपमान सहन न कर सकी, वह विना ही बुलाये अपने पिता के यहाँ गई और यज्ञ की ज्वाला में कूद कर अपने प्राण दे दिये।

(६) तपस्या से प्रसन्न होकर एक असुर को शिव ने यह वरदान दे दिया कि तू जिसके सिर पर हाथ रख देगा वह भस्म हो जायेगा। असुर ने पार्वती पर मोहित होकर, शिव के ही सिर पर हाथ रखना चाहा! शिव भागे, तब भगवान मोहनी रूप धारण कर सिर पर हाथ रख असुर के सम्मुख नाचने लगे। असुर भी मस्त होकर उसी प्रकार नाचने लगा और अपने सिर पर अपना हाथ रखते ही! भस्म हो गया। उसी का नाम 'भस्मासुर' था।

(७) राजा मोरध्वज की परीक्षा लेने के लिए भगवान साधू के रूप में शेर पर सवार होकर, उसके यहाँ पहुँचे। जब भोजन का समय हुआ तो भगवान ने कहा कि—राजा और रानी अपने पुत्र को प्रसन्नतापूर्वक आरे से चीर कर शेर को भोजन करादें! तब मैं भोजन करूंगा। राजा और रानी ने सहर्ष ऐसा ही किया। भगवान प्रसन्न हुये और उनका पुत्र भी जीवित हो गया।

(८) राजा हरिश्चन्द के सत्य की परीक्षा लेने के लिये, विश्वामित्र ऋषि ने एक वार राजा से जङ्गल में दान मांगा। राजा के पास उस समय, केवल सोने की बनी हुई खजाने की चाबियां ही थीं। उसने

वही दान में दे दी। ऋषि ने कहा कि राजा तूने मुझे चाबी दान करके—अपना सारा ही राज्य दे दिया। अब इतने बडे दान की दक्षिणा और दे। तब राजा हरिश्चन्द ने, अपने को पुत्र रानी समेत बेच कर दक्षिणा दी। राजा को एक भङ्गी ने खरीद लिया वह मरघट में रहने लगे। पुत्र और रानी को एक ब्राह्मण ने मोल ले लिया था। ब्राह्मण को पूजा के लिए फूल लाते समय, बाग में रोहिताश को साप ने काट लिया। रानी मृतक पुत्र का संस्कार करने के लिए मरघट में पहुँची। हरिश्चन्द ने उससे कर मागा। रानी के पास कुछ न था वह अपनी धोती फाड कर देने लगी। भगवान प्रसन्न हुये और राजा हरिश्चन्द्र का पुत्र भी जीवित हो गया।

(६) जब हिरण्यकश्यपु का पुत्र प्रह्लाद हिरण्यकश्यपु को किसी भी प्रकार भगवान मानने को तैयार न हुआ तो—उसने प्रहलाद से लोहे के दहकते हुये खम्ब की कौली भरने को कहा। खम्ब फटा और उसमें से नृसिंह भगवान प्रगट हुये उन्होंने हिरण्यकश्यपु को मार कर भक्त प्रहलाद की रक्षा की।

(१०) भगवान राम का राजतिलक होने वाला था। किन्तु केकई की हठ के कारण राजतिलक तो क्या हुआ—राम बनवास, भरत गृह त्याग, दशरथ मरण, सीता हरण आदि अनेक आपदाओं का सामना करना पड़ा। इसलिए किसी को कुछ पता नहीं कि पल में किसका क्या होने वाला है।

(११) रात के समय, सोते हुए, राम और लक्ष्मण को रावण का भाई 'अहिरावण' विभीषण का रूप धारण करके चुरा कर ले गया। जब वह उनको देवी पर बलि चढाने लगा तो पता लगाते लगाते, महावीर हनूमान भी वहीं पहुँच गये। अहिरावण को मार, कुशलता पूर्वक राम लक्ष्मण को ले आये।

(१२) चारों वेदों का ज्ञाता, महान पण्डित, अतुलित बलवान् और सब प्रकार से एश्वर्य युक्त रावण—कि जिसके एक लाख पुत्र और सवा लाख नाती थे अपने दुष्कर्मों के कारण सर्वनाश को प्राप्त हुआ।

(१३) निष्कलंक सीता को जब मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने बनवास दिया तो वह, वाल्मीकि के आश्रम में रहने लगीं। वहीं लव और कुश दो पुत्रों का जन्म हुआ। जब राम के 'राजसूयज्ञ' का घोडा इधर आया तो लव कुश ने उसे पकड़ लिया। तब राम लक्ष्मण आदि से लव कुश ने खूब युद्ध किया।

(१४) लव कुश युद्ध के पश्चात् जब सब एक दूसरे को पहचान गये, तो राम की आज्ञा से! लक्ष्मण सीता को अयोध्या ले चलने के लिए लिवाने गये। सीता ने लक्ष्मण को देखकर आंख मूंद लीं और कहा कि हे! धरती माता मुझे स्थान दो। मेरे लिए ससार में कहीं स्थान नहीं है। शोकातुर राम और लक्ष्मण देखने ही रह गये। पृथ्वी फटी और सीता जी उसमें समा गई।

(१५) एक वृक्ष के ऊपर, क्रौंच पक्षी का जोडा आनन्द से बैठा हुआ था। एक वधिक आया और उसने बाण मार कर नर को मार दिया। ऋषि वाल्मीकि पास ही में बैठे हुये, यह सब कुछ देख रहे थे। उस पक्षी की नारी की दशा को देखकर ऋषि का हृदय भर आया और उनके मुख से सहसा निकल ही तो पडा—मानिषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीसमाः।

यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

यहीं से कविता का प्रारम्भ हुआ और ऋषि वाल्मीकि आदि कवीश्वर कहलाये।

(१६) जिस समय भरी सभा में दुर्योधन की आज्ञा से ! द्रोपदी के केश खींच कर उसका अपमान किया था, तो द्रोपदी ने मन ही मन यह प्रतिज्ञा की थी कि—जब तक तेरी इसी जाघ के खून से जिस पर कि तू मुझे बिठाना चाहता है—यह केश न सींच लूंगी। तब तक यह केश इसी प्रकार खुले रहेंगे। अन्त को कुरुक्षेत्र की रणस्थली में द्रोपदी की वह प्रतिज्ञा भीम द्वारा पूरी हुई।

(१७) अर्जुन का पुत्र वीर अभिमन्यु जब किसी प्रकार भी परास्त न हुआ, तो दुर्योधन अपने हथियार फैंक कर अभिमन्यु से बोला कि—तू मेरा भतीजा है ! लड़ाई समाप्त हुई। अभिमन्यु ने उसकी बातों में आकर, शस्त्र फैंक दिये। तब दुर्योधन आदि ने अभिमन्यु को मार दिया। चक्रव्यूह रचने वाले गुरु द्रोणाचार्य मौन खडे हुए यह सब अनर्थ देख रहे थे।

(१८) अज्ञात बास के समय जब पाण्डव भेष बदल कर राजा विराट के यहा रहते थे। तब भीम रसोई बनाता था और द्रोपदी (सैरन्ध्री) रानी की सेविका थी। राजा का साला कीचक ! द्रोपदी पर मोहित हो गया। तब भीम द्रोपदी का रूप धारण कर, रात को उसके पास गया और वहीं कीचक को मार कर दिया।

(१६) गुरुद्रोणाचार्य के मरने के पश्चात्, उनके पुत्र अश्वस्थामा को दुर्योधन ने पाण्डवों से बदला लेने को उत्तेजित किया। अश्वस्थामा ने उसी समय प्रतिज्ञा की कि—मैं आज ही पांचों पाण्डवों का अन्त कर दूंगा। वह रात्री के समय पाण्डवों के शिविर में गया और पाण्डवों के धोखे में, द्रोपदी के पॉचों पुत्रों को—जो वही सो रहे थे मार आया।

(२०) कस ने 'श्रीकृष्ण' को मारने के लिए एक मल्लयुद्ध का आयोजन करके, भरी सभा में उनको बुलाया। जब श्री कृष्ण आगये तो सभी ओर से अनेक राक्षसों ने सहसा उन पर हमला कर

दिया। बलराम और श्री कृष्ण ने उन सब को मार कर, फिर कंस का संहार कर दिया।

(२१) जब भीष्म पितामह: किसी प्रकार भी, पराजित न हुए तो अर्जुन उनसे उनके मरने की विधि पूछने गया। पितामह ने कहा कि—यदि शिखण्डी मुझसे लड़ने को आये! तो मैं उसे देखते ही अपने शस्त्र फेंक दूँगा क्योंकि वह नपुंसक है, नपुंसक से लडना वीर का धर्म नहीं! उस समय मुझे कोई भी मार सकता है। अर्जुन ने वैसा ही किया।

(२२) पाडवों के 'राजसूयज्ञ' में श्री कृष्ण जी का सर्व प्रथम पूजन होते देख कर, राजा शिशुपाल जिसकी रुक्मिणी हरण के कारण श्री कृष्ण से शत्रुता थी—श्रीकृष्ण को गालियां देने लगा। सौ गाली तक तो श्री कृष्ण चुप रहे, क्योंकि शिशुपाल की माता ने श्री कृष्ण से शिशुपाल के सौ अपराधो की क्षमा माग ली थी। सौ गालियों से अधिक होते ही श्री कृष्ण ने उसी 'राजसूयज्ञ' में उसे मार दिया।

(२३) महाभारत के पश्चात् श्री कृष्ण जी एक बार जङ्गल मे चले जा रहे थे। गर्मी से बेचैन होकर! एक वृक्ष के नीचे पैर पर पैर रख कर लेट गये। उनके पैर में पद्म चमक रहा था। एक वधिक ने दूर से देखा—तो यह समझा कि पेड के नीचे हिरन बैठा है और यह उसकी आँख चमक रही है। उसके बाण का पैर के पद्म में अचूक निशाना लगते ही श्री कृष्ण का स्वर्गवास हो गया।

(२४) चाणक्य एक महान् तेजस्वी और कर्मठ ब्राह्मण था। एक बार उसके पैर में कुशा चुभ गई वह वहीं बैठ गया! नाखूनों से कुशा की जड को निकाल कर, ऊपर से छाछ डालने लगा। पाटिलपुत्र के राजा महापद्मनन्द द्वारा अपमानित महानन्द-

का पुत्र चन्द्रगुप्त मौर्य चाणक्य के इस कार्य को देख रहा था। उसने पूछा। महाराज यह क्या कर रहे हो? चाणक्य ने कहा! मेरे पैर में कुशा चुभी है, इसका सर्वनाश करना है। छाछ इसलिए डालता हूं कि—रही सही जड भी जल कर भस्म हो जाय। चन्द्रगुप्त महानन्द के यहा महानन्द के विना ही बुलाये श्राद्ध के अवसर पर चाणक्य को वहाँ ले गया और दरवार में सबसे ऊँचे आसन पर उसे विठा दिया। महाराज महानन्द ने आते ही, सर्वोच्च आसन पर काले कुरूप चाणक्य को देख! क्रोधित होकर कहा—इस चाण्डाल को किसने बुलाया है! इसकी चोटी पकड कर वाहर निकाल दो। दरवारियों ने वैसा ही किया। चाणक्य ने दोनों हाथ ऊँचे उठा कर, भरे दरवार में प्रतिज्ञा की कि—महानन्द का सर्वनाश करके ही चोटी में गाठ लगाऊगा। चन्द्रगुप्त यह चाहता ही था। फिर चाणक्य ने अपनी कुशल नीति से—महानन्द का सर्वनाश करके चन्द्रगुप्त को राजा वनाया।

(२५) महात्मा बुद्ध एक वृक्ष के नीचे वैठे थे। एक घायल पक्षी उनकी गोद में आकर गिरा, इतने ही में वह वधिक भी वहाँ आया जिसने उस पक्षी के वाण मारा था। उसने गौतम से कहा—कि यह पक्षी मेरा भोजन है मुझे दो। मैं कई दिन का भूखा हूँ। अगर नहीं दिया, तो थोडी ही देर में मैं भूखा मर जाऊगा। यह देख गौतम किंकर्त्तव्यविमूढ़ होगये।

(२६) भोज के पिता! अपने छोटे भाई मुज को भोज के लालन पालन और राज्य का भार, सौंप कर स्वर्ग सिधार गये। जव भोज वडा होगया तो मुज ने सोचा, यह राज्य का मालिक वनेगा। उसने अपने मन्त्री द्वारा भोज को मारने का निश्चय किया। मन्त्री भोज को जङ्गल में ले गया और उसे मारने के

लिये तलवार निकाली। तब भोज ने मुंज के नाम, यह सन्देश लिखा कि—इस पथ्वी पर रावण जैसे अनेकों राजा हुये। किन्तु यह राज्य, धन, दौलत किसी के भी साथ नहीं गया। भोज का सन्देश पढ कर, मुज बडा दुखित हुआ। मरने को तैयार हो गया। तब मन्त्री भोज को ले आया—क्योंकि उसने भोज को मारा नहीं था। एक बनावटी सिर लाकर मुंज को दे दिया था।

(२७) अशोक के पुत्र सुलाण पर, उसकी दूसरी माता मोहित होगई। इच्छापूर्ति न होने पर उसने सुलाण को मारने की सोची। कामान्ध अशोक से उसने धोखे से, एक पत्र पर हस्ताक्षर कर लिये जिसमें लिखा हुआ था—सुलाण को मार दिया जाय। किन्तु सुलाण के एक हित चिन्तक की कृपा से, सुलाण बच गया। अशोक अपने किये पर बहुत पछताया।

(२८) कलिंग देश को विजय करने के पश्चात् अशोक ने रण-भूमि में असंख्य वीरों को, मरे हुए देखा तो! उसके हृदय में घृणा उत्पन्न हुई। उसी क्षण से अहिंसा परमोधर्मः को मान कर, जीवन भर युद्ध न करने की प्रतिज्ञा की और बुद्ध धर्म का प्रचार करने लगा।

(२९) विश्व विजयी सिकन्दर महान् ने मरते समय अपनी मा से दो बातें कहीं-(१) मेरे दोनों हाथ! कफन से बाहर निकाल देना नहीं तो दुनियाँ यह समझेगी कि न मालूम सिकन्दर अपने साथ क्या क्या लेगया। (२) मुझे कोई मत रोना और रोना ही चाहे! तो वह रोवे जिसके घरमें कोई मरा न हो।

(३०) प्राणीमात्र के हितैषी महात्मा ईसा एक ईश्वर ही को मानने वाले थे। इसी अपराध के कारण उनके विरोधियों ने बडी निर्दयता से उनकी जीवन लीला समाप्त की।

(३१) फ्रास देश की स्वतन्त्रता के लिये 'देवीजोन' ने भरसक प्रयत्न किया। अन्त को विरोधियों द्वारा वह जीवित ही जला दी गई। किन्तु वह अमर है! फ्रास युग युग तक उसके गीत गाता ही रहेगा।

(३२) सोमनाथ के मन्दिर पर जब 'महमूदगजनवी' ने चढाई की तो—भारतवर्ष के सभी राजा सोमनाथ की रक्षा को गये। तब पुजारियों ने कहा कि—यहाँ कोई लडाई मत करना हिंसा हो जायगी, सोमनाथ भगवान अपने आप शत्रु का नाश कर देंगे। तुम सब लौट जाओ। वह सब लौट गये।

(३३) नूह, नौव्वा, मनु चाहे कुछ भी कह लो उस आदि पुरुष ने ससार में वढते हुये अनर्थ को देखकर सभी से कहा-तूफान आने वाला है सब का नाश हो जायेगा। सभी ने उसे पागल ही समझा। उसने मछली की आकृति को देखकर एक नाव बनाली उसी नाव में बैठा हुआ वह महा प्रलय को देखता रहा।

(३४) 'हजरत मूसा' परमात्मा के सच्चे भक्त थे! वह 'तूर' नाम के पहाड पर रहा करते थे। एक बार उन्होंने हठ करी कि—या खुदा तू मुझे अपना जल्वा दिखा! गैब से आवाज आई मत देख! तुझसे नहीं देखा जायगा। किन्तु वह न माने। यकायक तूर पहाड जल उठा, भयंकर लपटें देखकर मूसा को गस आगया। दूर दूर तक सभी चीजें जल गईं। किन्तु मूसा और उसकी झौपडी का बाल भी बांका न हुआ।

(३५) परमात्मा के परमभक्त एक महात्मा ने कुछ ऐसे मरीजों को अच्छा किया कि जिन्हें लोगों ने मुर्दा समझ लिया था। वह मुर्दों को जिन्दा करने वाले के नाम से प्रसिद्ध हो गये। कुछ विरोधियों ने उनको काफिर बताकर फतवा दिया कि इसकी

खाल खींचलो, महात्मा ने अपने आप ही अपनी खाल खींच कर उनको देदी। कहते है—कि इस महान अनर्थ को देखकर सूर्य पृथ्वी पर गिरना ही! चाहता था! किन्तु उन्होने रोक दिया और तभी से उनका नाम 'शम्शतबरेज' पड़ा।

(३६) दुश्मनों से जान बचाकर, भागते हुये 'जरदश्त' ने परमात्मा को भूलकर, एक पेड से पनाह मांगी! पेड़ का तना फट गया और जरदश्त उसमें छिप गया। दुश्मन भी वहीं आ पहुँचे शैतान की बन आई! उसने बता दिया कि इस पेड़ के तने में जरदश्त है। तब आरे से उस पेड़ को चीरा गया।

(३७) अनलहक (मुझमें खुदा है! मै खुदा हूं! हर कोई खुदा है) इस बात को माने वाले महात्मा मसूर की गहराई को न समझ कर, एक बादशाह ने उनसे सिजदा कराना चाहा मंसूर ने सिजदा न किया इसलिये उन्हे सूलो पर चढा दिया।

(३८) विश्व कल्याण की सद्भावना रखने वाले यूनान के महात्मा सुकरात को, उनके विरोधियों ने जहर का प्याला पिला कर उनका अन्त कर ही दिया।

(३९) जब 'संयोगिता' हरण के कारण! पृथ्वीराज और जयचन्द में दुशमनी हो गई तो मुहम्मद गोरी जयचन्द की सहायता से पृथ्वीराज को कैद करके गजनी, को लेगया और उनकी आँखे भी फोड दी। तब राजकवि 'चदबरदाई' ने गजनी पहुँच कर पथ्वीराज के शब्दभेदी बाण का खूब गुण गाया। भरे दरबार में निशाना लगाने का आयोजन किया गया। बादशाह एक ऊँचे महल में बैठा हुआ खिडकी से यह सब दृश्य देख रहा था। पृथ्वीराज आये उन्होंने निशाना साधा। चदबरदाई ने सुलतान के बैठे हुये स्थान की ऊचाई का माप कविता द्वारा पृथ्वीराज को

बतला दिया। पृथ्वीराज ने बाण चलाया निशाना ठीक ही बैठा। मुहम्मद गौरी मर कर नीचे गिर पडा। तुरन्त ही पृथ्वीराज और चंदवरदाई एक दूसरे को मार कर स्वर्ग सिधार गये।

(४०) मुहम्मद गौरी से लडते हुए, पृथ्वीराज जब घायल होकर गिर पडे तो उनको—मरा हुआ समझ कर गीध उनका मांस खाने के लिए इकट्ठे होने लगे। पास ही में स्वामिभक्त घायल 'सयमाराय' भी पडे थे। वह पृथ्वीराज के प्राण बचाने के लिये अपने हाथ से अपना ही मास काट कर गीधों के आगे फैंकते रहें। अन्त को मूर्छित पृथ्वीराज खडे होगये।

(४१) राणा सांगा के मरने के पश्चात् उनके पुत्र बालक उदयसिंह को 'पन्ना' धाय ही पालती थी। बनवीर ने सोचा कि उदयसिंह बडा होकर अपना राज्य ले लेगा। वह उदयसिंह को मारने की इच्छा से, रात को पन्ना के पास पहुँचा और बोला उदय कहा है! पन्ना ताड गई! उसने उसी क्षण तनिक भी मोह न करके अपने पुत्र की ओर! जो पास ही में सो रहा था इशारा कर दिया। बनवीर उसे मार कर चला गया। पन्ना ने उदयसिंह को पत्तलों के टोकरे में छिपा कर, एक विश्वासपात्र राजपूत द्वारा महल से बाहर निकाल दिया। और आप भी चली गई।

(४२) मीराबाई बचपन ही से, कृष्ण की अनन्य भक्त थीं। विवाह होने पर इनको अपने पति द्वारा, कृष्ण भक्ति से हटाने के लिये अनेक दुख सहने पडे किन्तु यह दृढ़ रहीं।

(४३) बादशाह अकबर ने अपनी कुटनियों द्वारा महाराणा प्रताप के भाई ! शक्तसिंह की कन्या किरणकुमारी को जब मीनाबाजार में धोखे से बुलवा लिया—तो किरणदेवी अवसर पाकर अकबर की छाती पर कटार अडाकर चढ़ बैठी।

(४४) नादिरशाह ईरान का 'गडरिया' था। अपनी योग्यता से बादशाह बन बैठा। इसी ने देहली में आकर 'कोहनूर' हीरे के लिये कत्लेआम करवाया था। जिसमें लाखों आदमी मारे गये। इसका हुक्म बड़ा सख्त था, हुक्म नादिरशाही जगत् प्रसिद्ध है।

(४५) चित्तोड के राजा भीमसिंह की रानी पद्मनी पर मोहित होकर जब अलाउद्दीन खिलजी ने पद्मनी को पाने की इच्छा से चित्तोड़ पर हमला किया, तो अनेक राजपूत मारे गये अन्त को पद्मनी भी जौहर व्रत धारण कर अनेक राजपूतानियों समेत चिता जला कर भस्म हो गई।

(४६) जब औरंगजेब अपने पिता शाहजहां को कैद करके बादशाह बना तो शाहजहा की लड़की जहानारा भी उसके साथ कैद में थी। जहांनारा ने वृद्ध शाहजहां के साथ अनेक यम यातनायें सहते हुए भी अन्त तक सेवा की और उसी अवस्था में आजीवन अविवाहित रह कर कैद ही में इस ससार से विदा हुई।

(४७) अफजल खां ने शिवाजी को धोखा देकर, बिना कोई हथियार लिये हुए मिलने के लिए बुलाया। जब शिवा जी आगये, तो उसने उनको मारने के लिये तलवार उठाई। किन्तु शिवाजी अपनी उगलियों में पहले ही से 'बघनखा' छिपाये हुये थे उन्होंने अफजल खा को मार दिया।

(४८) औरंगजेब ने अपने बड़े भाई दारा को जो राज्य का हकदार था—राज्य पाने की लालसा से, आगरे के लाल किले में धोखे से मरवा कर उसकी आँखे अपने पैरों से खूब मसली थीं।

(४९) हकीकतराय की एक बार मकतब में एक मुसलमान लडके से कहा सुनी होगई। उसने 'गङ्गामाई, को गाली दी, तो हकीकतराय ने 'बीफातमा' को गाली दे दी। बस इसी बात पर

मौलवी ने फतवा दे दिया कि—हकीकत काफिर है। या तो यह मुसलमान बन जाय; वरना इसे मार दो। हकीकत मुसलमान नहीं बना। मार डाला गया, किन्तु वह आज भी अमर है।

(५०) गुरु गोविन्दसिंह के दोनों छोटे पुत्रों को सूवा सरहिद के शासक ने जीवित ही दीवार में इसलिये चिनवा दिया कि वह मुसलमान नहीं बनते थे। दोनों भाई प्रसन्नतापूर्वक 'वाह! गुरू की फतेह' का जयघोष करते हुये स्वर्ग सिधार गये।

(५१) गुरु तेगबहादुर और गुरु अर्जुन को औरंगजेब ने इसी जगह टुकडे करके जलवाया था, जहाँ आज देहली के चाँदनी चौक में शीशगज का गुरुद्वारा बना हुआ है।

(५२) औरङ्गजेब ने प्रसिद्ध वीर वन्दा वैरागी को लोहे के पींजरे में कैद करके, उसके अबोध बेटे को मरवा कर, उसका कलेजा वीर वंदा' को खाने के लिए दिया। जब उसने न खाया तो बर्छियों से उसका शरीर बींध कर उसे मार दिया।

(५३) महात्मा 'सरमद दारा के गुरु थे। औरङ्गजेब ने सोचा कि दारा के मरने पर कहीं यह विद्रोह न कर दें—तो उसने उन पर यह अपराध लगाया कि तुम नंगे क्यों रहते हो? देहली की इसी 'जामा मसजिद' में उनका सिर काटा गया। मसजिद के सामने उनकी कब्र अब तक बनी हुई है।

(५४) औरङ्गजेब की पुत्री जेबुन्निसा 'मुखफी' (छिपा हुआ) उपनाम से कविता करती थी। 'अकिल खाँ' से उसका प्रेम था। औरङ्गजेब को जब पता लगा कि अकिल खाँ महल में है। तो उसने तलाश किया। किन्तु वह न मिला तब औरङ्गजेब ने मुखफी से पूछा इस डेग में क्या है? उसने कहा—'नहाने के लिए पानी गरम करना है।' औरङ्गजेब क्रोधित होकर बोला! तो आग क्यों

नहीं जलाती ! और वह वहीं खड़ा रहा। जव उसे विश्वास हो गया कि, आकिल खॉं मर गया होगा ! तव वहॉं से गया। इस प्रकार मुखफी द्वारा डेग में छिपाया हुआ उसका प्रेमी 'आकिलखॉं' मर गया किन्तु उसने मुँह से आह भी नहीं निकाली।

(५५) टीपू सुल्तान ! अपने विश्वास पात्र मत्री की सलाह से पालकी में वैठ कर महल से वाहर निकला। किन्तु वह नीच मंत्री अंग्रेजों से मिल गया था, फौरन ही अंग्रेज सेना आगई और उसने 'टीपू' को मार डाला।

(५६) वनारस के महाराज चेतसिह, और वंगाल के महाराज नन्दकुमार पर जाल साजी का आरोप लगाकर अगरेजों ने उन्हें निरपराध ही फासी पर चढा दिया।

(५७) प्लासी की लडाई में जव अंग्रेज बुरी तरह हार गये, तो उन्होंने वङ्गाल के नवाव सिराजुद्दौला को उसके विश्वासपात्र मंत्री 'मीर जाफर' द्वारा राज्य का लालच देकर महल में सोते हुये सिराजुद्दौला को मारवा डाला।

(५८) भारत में अंगरेजी राज्य की नींव डालने वाले लार्ड क्लाइव' पर लंदन में कुछ लोगों ने रिश्वत लेने का आक्षेप लगाया। उसने उसी पार्लियामेंट में अपने चाकू से आत्महत्या करली।

(५९) ढाके में वनी हुई प्रसिद्ध मलमल के सामने जव विलायत से आया हुआ अंगरेजों का माल न विका तो उन्होंने भारतीय कारीगरी को मिटाने के लिये उस महीन मलमल को वनने वाले ! जुलाहों के अँगूठे कटवा दिये।

(६०) अन्तिम मुगल सम्राट ! -वहादुरशाह को 'हडसन' नामक अंग्रेज ने, उसके वेटे और पोतों के, सर काट कर उसके आगे धर दिये और वोला कि यह—अंग्रेजों की देहली के वादशाह को भेंट

है। जहाँ हडसन ने सर काटे थे, वह खूनी गेट अशोक की लाट के पास, लवे सडक देहली में आज भी बना हुआ है।

(६१) अवध के नवाव 'वाजिदअलीशाह' पर अगरेजों ने झूठा दोषारोपण लगा कर। जबरदस्ती उसका राज्य छीन लिया महल लूटा, वेगमों की वेइज्जती की और उनके बच्चों को मार दिया।

(६२) वीर तातिया टोपी, मुवारिकअली और नानासाहव आदि देशभक्तों की सहायता से झासी की महारानी 'लक्ष्मीवाई' भारत की स्वतन्त्रता के लिये सन् १८५७ ई० में अगरेजों से युद्ध करती हुई स्वर्ग सिधार गई।

(६३) महाराज यशवन्तसिंह के साथ राज्य सिंहासन पर। एक गणिका को वैठा देख 'ऋषि दयानन्द' ने उसका तिरस्कार किया। गणिका ने ऋषि दयानन्द के विश्वासपात्र रसोइये व्राह्मण द्वारा लालच देकर उनको विष दिलवा दिया। अन्तिम समय ऋषि ने उस व्राह्मण को रुपये देकर भगा दिया कि—कहीं इसको पुलिस न पकड ले।

(६४) प्रसिद्ध देशभक्त और योगाभ्यासी सूफी अम्वाप्रसाद मुरादावाद ही के रहने वाले थे। जव अगरेज सरकार ने इनको पकडना चाहा तो यह वडी चालाकी से टर्की पहुँच गये। वहाँ अगरेजी फौजों ने इन्हें पकड लिया। जिस दिन इन्हें तोप के मुह से वॉध कर उडाया जाने वाला था तो यह समाधि अवस्था में निष्प्राण वैठे हुए मिले। टर्की की जनता इनसे वडा प्रेम करती थी। इनकी समाधि 'शिराज' में वनी हुई है। और प्रति वर्ष मेला लगता है।

(६५) महाराणा रणजीतसिंह के मरते ही 'महारानी जिन्दा' को कैद करके उनके, पुत्र दलीपसिंह को ईसाई वनाकर, अंग्रेजो ने लन्दन भेज दिया। 'कोहनूर' हीरा और पंजाव का राज्य भी छीन लिया। सिक्ख राज्य का इस प्रकार अन्त हुआ।

(६६) अवध के नवाब 'बाजिदअलीशाह' को अंग्रेजी फौज ने महल में घेर कर जबरदस्ती यह लिखवा लिया कि—मेरा राज्य अंग्रेजी राज्य में मिला लिया जाय और फिर उसे कलकत्ते में नजरबन्द कर जेल में डाल दिया।

(६७) जब अंग्रेजों ने गाय और सुअर की चर्बी से बने हुए कारतूस फौज को दिये—तो सब में असन्तोष फैल गया! गदर में सर्व प्रथम 'मङ्गल पाड़े' ने 'हूसन' नाम के फौजी अफसर को मार कर यज्ञ प्रारम्भ किया था।

(६८) लार्ड डलहौजी ने पुत्र गोद लेने की प्रथा को बन्द करके कितने ही सन्तान हीन राजाओं के राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया।

(६९) पूना की महारानी 'अन्नपूर्णा, बीमार पड़ी हुई थीं। तब अंग्रेजों ने उनका सब कुछ लूट कर, राज्य छीन लिया।

(७०) ग्वालियर विजय करने के पश्चात् नाना साहब राग रङ्ग में फस गये। रानी लक्ष्मी बाई ने बहुत समझाया, किन्तु उस पर उल्टा ही प्रभाव पडा। सिंधिया अंग्रेजों की सहायता से फिर ग्वालियर का राजा बन गया।

(७१) 'रेनोड' नामक फौजी अफसर ने इसी फतेहगढ़ शहर को जलवाया और कितने ही आदमियों को वृक्षों पर लटका कर मार दिया। वह पेड़ अब भी खड़े हैं।

(७२) अंग्रेजों ने गदर में मुसलमानों के विरुद्ध सिक्खों को लड़ाने के लिये यह कहा कि—खालसा दिल्ली का राजा होगा 'गुरु ग्रन्थ साहब' की वाणी सत्य होने वाली है। तुम इनसे बदला लो! यही मौका है। सिक्ख इस चाल को न समझ पाये।

(७३) मुरादाबाद में नज्जू खा ! नबाब को जहा आज कल कचहरी बनी हुई है—इसी जगह सूखे हुये चूने के कढाव में विठा कर ऊपर से पानी डाल कर अँग्रेजों ने मारा था।

(७४) अग्रेजों ने अनेकों हिन्दू और मुसलमानों को नंगा करके तावे के टुकडों से दाग लगा कर, गाय और सुअर की खाल में वद करके फिर उनको मन्दिरों और मसजिदो में भूना थ।

(७५) गदर के सुप्रसिद्ध नेता मौलवी अहमदशाह को सहायता देने के बहाने पावन के राजा ने अपने यहा बुला कर धोके से, उसका सिर काट लिया। जब मौलवी का सिर लेकर वह राजा इनाम पाने की इच्छा से, गोरे आफीसर के पास गया तो उस आफीसर ने यह कह कर कि—तेरा क्या यकीन—उसी समय उसको गोली से मार दिया।

(७६) जिस तातिया टोपी का नाम सुनकर अग्रेज कापते थे—उसको उसके एक विश्वासपात्र ने धोखा देकर इनाम पाने की इच्छा से अग्रेजों को पकडवा दिया।

(७७) 'पीरअली' ने इलाहाबाद में अग्रेजों से खूब लडाई लडी। अन्त को यह वीर भी एक विश्वासघाती द्वारा पकडे गये। और फासी पर लटका दिये गये।

(७८) इटावा शहर में एक मकान के अन्दर से बीस वीरों ने गोलिया चलाकर, गोरों की एक वडी फौज को आगे नहीं वढने दिया। तव उस मकान को तोप से उड़ा दिया गया।

(७९) अस्सी वर्ष के वूढे जगदीशपुर के महाराज कुँवरसिंह के हाथ में जब अग्रेजों से, लडते हुये गोली [लगी ! तो उन्होंने उसी क्षण अपने ही आप अपना हाथ काट कर गगा में फैंक दिया। फिर भी लडते ही रहे।

(८२) कनाडा-अमरीका में रहने वाले 'प्रवासी' भारतवासियों को अपमानित करने वाला 'हापकिंसन' नामक एक अंग्रेज अफिसर था। वीर 'मेवासिह' भरी सभा में उसको मार कर, प्रसन्नतापूर्वक फांसी के तख्ते पर ! झूमते हुये स्वर्ग सिधार गये।

(८३) देशभक्त लाला 'हरदयाल' एम० ए० देहली के रहने वाले थे। भारत की स्वतन्त्रता के लिये—जीवन भर 'शस्त्रविद्रोह' का प्रयत्न भारत से बाहर रहते हुये करते ही रहे। अंग्रेज सरकार इनसे डरती थी। इसी कारण इनको निर्वासित कर दिया था।

(८४) पंजाब के प्रसिद्ध स्थान 'अजनाला' में 'कल्यादांबुर्ज' और 'कल्यादांखू' नाम का (कुआ) अब तक बने हुये हैं। 'कपूर' नामक अंग्रेज ने इसी कुएं और बुर्ज में अनेक हिन्दुस्तानियों को मारा था।

(८५) 'खुदीरामबोस' एक सोलह वर्षीय बङ्गाली युवक था। इसको एक अंगरेज अफिसर पर बम फैंकने के अपराध में—फांसी हुई तो यह वीर ! हंसते हुये, गीता का पाठ करता हुआ स्वर्ग सिधार गया।

(८६) महाराष्ट्रीय ब्राह्मण 'चाफेकरबन्धु' तीन सगे भाई थे, 'रैंड' नामक अंग्रेज अफिसर ने उन दिनों बड़ा जुल्म कर रक्खा था। उसको मारने के अपराध में। इन तीनों देशभक्तों को फांसी हुई।

(८७) अमरीका से प्रवासी भारतीयों को भारत आने पर अंगरेजों ने प्रतिबन्ध लगा दिया था—तो 'कोमागातामारू' नामक जहाज में बहुत से भारतीय आये। जब जहाज 'बजबज' बन्दरगाह पर लगा तो 'भारतमाता की जय' बोलते हुये भारतवासी उसमें से उतरते जाते थे और अंग्रेज फौज उनको गोली से मारती जाती थी।

(८८) जब अंगरेजों ने पञ्जाब के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी ! वीर 'कर्तारसिंह' को फांसी पर चढ़ाया तो उसने अपने हाथ से ! अपने गले में, फांसी का फंदा डाल कर प्रसन्नतापूर्वक प्राण दे दिये।

(८६) प्रसिद्ध देशभक्त वीर 'दामोदरसावरकर' को जब अगरेज नजरबन्द करके जहाज में लेजा रहे थे—तो यह वीर । अवसर पाकर समुद्र में कूद पडे । काफी समय तैरने के पश्चात् ! किनारे पर पहुँच भी गये थे किन्तु फिर पकड लिये गये ।

(६०) ला० हरदयाल द्वारा भेजा गया शस्त्रों से भरा जहाज जब 'बालेश्वर' पहुँचा—तो अंगरेज़ सरकार को भी पता लग गया । उस जहाज की रक्षा करते हुए प्रसिद्ध क्रांतिकारी 'यतीन्द्रनाथमुकर्जी' अपने साथियों समेत फौज से लडते हुये शहीद होगये ।

(६१) देहली के दरबार में 'लार्डहार्डिङ्ग' पर बम फैंक कर, 'रासबिहारीबोस' जापान चले गये और वहीं से भारतीय स्वतन्त्रता का प्रयत्न करते रहे । अन्त को नेता जी 'सुभाषचन्द्रबोस' के साथ आजाद हिन्द फौज में अगरेजो से लड़ते हुए, स्वर्ग सिधार गये ।

(६२) प्रसिद्ध क्रांतिकारी 'सत्येन्द्रनाथ' को जब फासी लगी तो उसकी माता ने उससे मिलना चाहा । सत्येन्द्र ने कहा कि मैं—एक शर्त पर माता से मिल सकता हू । यदि वह हसती हुई मुझसे मिले । उस वीर प्रसूता ने भी वैसा ही किया ।

(६३) आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी 'स्वामी श्रद्धानन्द' जी से 'अब्दुलरशीद' नामक एक मुसलमान मिलने गया । बात करने के पश्चात् उसने पानी माँगा । उस समय वहाँ और कोई न था, स्वामी जी पानी पिलाने लगे, तो उसने उनके सीने में गोली मार दी ।

(६४) 'वीणादास' नामक एक बङ्गाली युवती ने ! भरी सभा में बङ्गाल के गवर्नर को उसके जुल्मों के कारण गोली से मार दिया ।

(६५) जब 'निजामहैदराबाद' ने हिन्दुओं के सभी धार्मिक कर्मों पर । प्रतिबन्ध लगा दिया तो ! समस्त भारत से अनेकों आर्य वीर वहाँ सत्याग्रह करने को गये और अन्त को आर्यधर्म की विजय हुई ।

(९७) जब अफगानिस्तान के बादशाह 'शाहअमानुल्ला' को अंग्रेजो ने ! चालाकी द्वारा गद्दी से उतार कर 'बच्चासक्का को बादशाह बना दिया, तो उसने खूब ही मनमानी की। उसी के परिणाम स्वरूप बच्चासक्का को एक अफगानी ने खत्म कर दिया।

(१०१) रूस के बादशाह 'जार' के अत्याचारों से तंग आकर प्रजा ने विद्रोह कर दिया और जार को मार दिया।

(१०२) 'डायर' और 'ओडायर' नामक दो अंग्रेज अफसरो ने पञ्जाब के प्रसिद्ध स्थान 'जलियाँवाला' बाग में निहत्थे ! भारतवासियों पर गोलियां चलवाई थी।

(१०३) 'साईमनकमीशन' का बाईकाट करने पर लाहौर में 'सौडर्स' नामक एक अंग्रेज अफसर ने लाला लाजपतराय के सीने पर लाठियां मारी ! उसी मार्मिक चोट के कारण लाला जी स्वर्गवासी हुये।

(१०४) हिन्दू मुसलिम झगडे में 'कानपुर' के प्रसिद्ध देशभक्त श्री 'गणेशशङ्कर विद्यार्थी' हिन्दुओं द्वारा पकडी हुई मुसलमान औरतों को उनके घर पहुँचाने जाते हुए मुसलमानों द्वारा मार दिये गये।

(१०५) इलाहाबाद के प्रसिद्ध 'एलफ्रेंडपार्क' में• प्रसिद्ध क्रांतिकारी 'श्रीचन्द्रशेखरआजाद' पुलिस का सामना करते हुए, अन्त में अपने आप गोली मार कर स्वर्ग सिधार गये।

(१०६) आनन्द भवन (इलाहाबाद) में रहने वाले पं० मोतीलाल नेहरू का सारा परिवार ही देश को अर्पण होगया।

(१०७) प्रसिद्ध देशभक्त श्री 'यतीन्द्रनाथदास' आमरण अनशन करके जेल ही में स्वर्ग सिधार गए।

(१०८) रोशनसिंह, अश्फाकउल्ला, राजेन्द्र लाहडी और श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' शाहजहाँपुर जिले के रहने वाले थे। 'काकोरीकेस' में रेल रोक कर खजाना लूटने के अपराध में इनको फाँसी हुई।

(१०६) जलियाँन वाले बाग में गोली चलवाने वाले 'डायर' को लगभग ३० वर्ष बाद 'उधमसिंह' नामक एक पंजाबी वीर ने लन्दन की एक भरी सभा में गोली से मार दिया।

(११०) राष्ट्रमाता 'कस्तूरबा' और श्री 'महादेवदेसाई' का आगा खाँ महल में स्वर्गवास हुआ। दोनों की समाधि वहीं पर बनी है।

(१११) गढवाली प्रसिद्ध नेता श्री 'देवसुमन' जी जेल ही में चौरासी दिन अनशन करके स्वर्ग सिधार गये।

(११६) स्वर्गीय श्री 'चित्त पाँडे' बलिया जिले के अच्छे नेता थे क्रान्ति के युग में इन्होने बलिया में अपनी ही सरकार बनाली थी।

(११७, स्वर्गीय श्री राजनारयण मिश्र खीरी लखीमपुर जिले के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी थे। इनको भी फांसी हुई।

(११८। हिन्दू मुसलिम वैमनस्य को दूर करने के लिये राष्ट्र पिता बापू जीवन भर प्रयत्न करते ही रहे। अन्त को नाथूराम गोडसे' एक हिन्दू ने प्रार्थना सभा में जाते हुये बापू को मार दिया।

(१२२) शिमिर, नाम का एक मुसलमान सरदार जो कि हजरत मुहम्मद साहब का उपरी दिल से भक्त था। 'जंग-कर्बला' में इसी ने हजरत के नवासों को नमाज पढते हुये मारा था।

(१३०) ईद के दिन हजरत 'इब्राहीम' ने अपने बेटे हजरत 'इस्माईल' को खुदा के नाम पर बलिदान किया था।

(१४४) पाकिस्तान के कुत्सित कर्मों और अत्याचारों से दुनियां को मालूम होगया कि पाकिस्तान है क्या? हरएक सच्चा मुसलमान उससे नफरत ही करेगा। इसलिए काशमीर के शेर, शेख अब्दुला पर विश्वास रखने वाले प्रत्येक काशमीरी मुसलमान का दृढ संकल्प है कि वह - काशमीर के लिये कुर्बान हो जायगा। लेकिन काशमीर पाकिस्तान में नहीं मिल सकेगा।

[बालवें]

(१५६) भारत के प्रसिद्ध महात्मा 'उड़ियाबाबा' को वृन्दावन में उन्हीं के किसी अनन्य भक्त और परम शिष्य ने ! न जाने, क्यों ? भरी सभा में 'गंडासा' मारकर उनकी जीवनलीला समाप्त कर ही दी।

(१६७) अँगरेजों ने अनाज दूसरी जगह भेज कर बंगाल की जनता को भूखा इसलिए मारा था कि इम्फाल पर नेता जी लड़ रहे थे। कहीं यह लोग उनकी सहायता न करने लगें।

(२०५) मनु भगवान ने 'मनुस्मृति' में हिन्दू धर्म के नियम लिखे हैं-पति पत्नी व्रत को जन्म जन्मान्तर का सम्बन्ध बताते हुए प्रत्येक अवस्था में उसे निभाने का उन्होंने आदेश दिया है। मैं यह मानता हूं ! कि स्त्रियों को पैरों की जूती—न समझ कर, उनको उचित सन्मान और बराबर के अधिकार ! देने ही चाहियें। किन्तु 'हिन्दूकोड' में तलाक-नीति बडी ही घृणास्पद और घातक सिद्ध होगी।

(२४५) सरदार 'भगतसिंह' लाला लाजपतराय के मारनेवाले 'सौन्डर्स' को मारने के, अपराध में पकड़े गये। उनके शरीर के टुकडे करके सतलज के किनारे अंगरेजो ने उनको फूंक दिया।

(२४७) बाज पक्षी के डर से एक कबूतर राजा शिवि की गोद में जा बैठा ' बाज ने शिवि से कहा कि कबूतर मेरा भोजन हैं ! मुझे दो ! राजा ने कबूतर के बदले अपना मांस काट कर बाज को दे दिया।

दधीच ऋषि के पास देवता इकट्ठे होकर गये और उनसे बोले कि असुरों ने हमें सता रक्खा है। उन्हें मारने के लिए आपके हाड के बने हुये अस्त्र की आवश्यकता है। ऋषि ने प्रसन्नता पूर्वक अपने प्राण त्यागकर 'हाड़' देवताओं को दे दिया।

(२४८) परशुराम जी के पिता 'ऋषियमदग्नि' को मार कर 'सहस्रावाहु' नामक राजा। उनकी कामधेनु को लेगया। जब परशुराम जी को पता लगा तो उन्होंने सहस्रावाहु को मार दिया।

[कविभूषण श्री 'अनूप' जी]

हम निःसंकोच कह सकते है कि 'विकल' जी ने 'वलिशाला' में उन अनेक—ऐतिहासिक विषयों को 'पुनरुज्जीवित' कर दिया है जो अवतक इतिहास के गर्त में ही पडे थे। कहाँ हिन्दूकूट नीति के आदर्श 'चाणक्य' और कहाँ सूफी-सम्प्रदायाचार्य 'सरमद' कहाँ गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों का त्याग, और कहाँ लार्डक्लाइव की सर्वभक्षिता।

'विकल' जी की कविता में एक बात मुझको अत्याधिक अच्छी लगी और वह है—आपकी एकान्त साधना, जिसके कारण आपके काव्य में चार चाँद लग गये है। आपकी कविता सरस, मधुर, युक्ति-युक्त और सालंकार है। साथ ही आपकी कलम में वह वल है। जो मनोगत चित्र को साक्षात् पाठक के नेत्रों के सामने खड़ा कर देता है।

'विकल' जी केवल मनोरञ्जन के लिये काव्य नहीं रचते, आपने 'उपयोगितावाद' से काफी सहायता प्राप्त की है। आपकी कविता का सामाजिक पक्ष वडा ही प्रवल है आपने मनुष्य की सांसारिक स्थिति को उन्नत करने, उसके मानसिक व्यवहार को विस्तृत करने, तथा उसके साँस्कृतिक जीवन को विकसित करने की ओर ध्यान दिया है।

'विकल' जी ने मनुष्य जीवन के उन सभी अङ्गो पर भी प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है, जो उसको गौरवान्वित वनाते हैं, समाज में स्थान देते हैं तथा आधुनिक जीवन को पूर्ण करते हैं।

आपकी कविता में एक प्रकार का गाम्भीर्य है। जो इतिहास के विद्यार्थी को अधिक रुचिकर प्रतीत हुये विना नहीं रह सकता। आपने अपने विषय काव्य-गत एव भावगत का अच्छा अध्यन किया है और वह भी ऐसे स्थल में जहाँ काव्य विषय का मरुस्थल व्याप्त हो। आशा है 'विकल' जी की लेखनी से हिन्दी साहित्य को समृद्धि प्राप्त होगी।

वन्सत पंचमी १९९८ — अनूपशर्मा एम ए. एल. टी

वलिशाला

[आचार्य श्री 'रमण' जी]

वलिशाला पुस्तक के रचियता कविवर 'विकल' जी ने मधुशाला प्रभृति से मजमून छीन कर उसे अपूर्व रूप में परिणित और सुविस्तृत क्षेत्र में प्रयुक्त किया अथच अधिक प्राञ्जल तथा शानदार वना दिया है उनकी उत्पेक्षा अपनी चीज है।

मधुशाला आदि का क्षेत्र संकुचित, अविरल, गुप्त, संकीर्ण, प्रच्छन्न और क्षुद्र होता है। कुछ थोड़े से जार, लम्पट, नशा खोर ही उसके भक्त सेवक या उपासक हैं। यही कारण है कि मधुशाला का निर्माण और संस्थापन कहीं कहीं होता है सर्वत्र नहीं वह भी प्रायः छिपकर।

इसके विपरीति वलिशाला का क्षेत्र विशाल है और इससे सर्व साधारण जनता का साक्षात् सम्बध है। सब लोग इसे प्रत्यक्ष देखते भोगते और परोक्ष अनुभव करते हैं। विश्व की मुख्य समस्या सर्व प्रत्यक्ष घटना और अन्त क्रान्ति क्रिया मय मृत्यु व्यवसाय की विराट महा वलिशाला के लिये खुला मैदान यह सारा संसार है।

वलिशाला परम आर्यपुरुषों द्वारा भी पूजित, प्रशंसित और आराधित है। सुरासुरसंग्राम' मशहूर है। वड़े-वड़े ऋषि भी नरमेध, गोमेध, अश्वमेध, अजमेध पशुमेध आदि प्राणिवलिशालामयी यज्ञशाला के रूप में 'वलिशाला' के प्रवर्तक हो गये हैं। ईश्वर के अवतार पुरुष भी—"विनाशाय च दुश्कृताम्" 'वलिशाला' ही खोलने आते हैं। घोर स्वार्थपरायण, नरराक्षसों, जालिम कौमो, वर्बर वर्गों, और दुष्ट राष्ट्रों की ओर से वरावर चलाई जाने वाली ' वलिशालाओं का तो कोई लखा वा हिसाव ही नहीं है।

विश्व की इस सर्वतो मुखी और सर्वपथीना 'वलिशाला' में वलवत्तर नरपिशाचों. नृशंस आततायियों द्वारा, सर्वथा निरपराध, निर्दोष तथा निरीह प्राणियों को वलि चढ़ाये जाते देख ? भला कौन सहृदय मनुष्य

'विकल' न हो उठेगा। 'बलिशाला' के कवि का 'विकल' होना स्वाभाविक, उचित, और अनिवार्य है।

'विकल' जी ने अतीत की बलिशालाओं को इतिहास के गम्भीर अनुसन्धान से और वर्त्तमान बलिशालाओं को प्रत्यक्ष प्रकृति निरीक्षण तथा विश्वरूप दर्शन से अच्छी तरह देखा और समझा है। यही कारण है कि वह 'बलिशाला' के वाङ्मय-चित्रण में बहुत ही सफल हुए हैं; इसमें 'विकल' जी का निपुण कविकर्म, अभिव्यक्त है।

यों तो विश्व की 'बलिशाला' सर्व दृश्य वस्तु है; इसी के गर्भ में भयानक, अद्भुत, वीर, रौद्र, करुण और वीभत्स रस मूर्त्त रूप से खेलते हैं, शृङ्गार, वात्सल्य तथा शान्तरस भी इसी की भ्रकुटिविलास पर नाचते हैं। सुतरॉ 'बलिशाला' के श्रव्य वाङ्मय में कोई अधिक चमत्कार नहीं लाया जा सकता। फिर भी विकल' जी की 'बलिशाला' पुस्तक में अपूर्वता मौलिकता और अपनी विशेषता है।

बलिशाला काव्य में 'विकल' जी ने विश्वमानव-समाज के सभी प्रमुख वर्गोंके हिंस्र अहिंस्र मृदु और क्रूर भावों को अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। आततायियों के अत्याचार से बर्बर कौमों! जालिम राष्ट्रों और वर्गों के स्वार्थिक सग्राम से, मजहबियों की धर्मान्धता से, दुर्जनों के मात्स्य न्याय से, भारतीय सतियों के जौहर से, सत्याग्रही नर-रत्नों के आत्मबलिदान से और अन्य कई निमित्तों से भूतल पर खुली हुई और सतत प्रवृत्तमान 'बलिशाला' का दिग्दर्शन, बडी खूबी से ऐतिहासिक और प्रत्यक्ष-दृष्ट उदाहरणों के साथ, 'विकल' जी ने कराया है।

'विकल' जी उदीयमान और भविष्णु ज्ञात होते हैं। इनसे हिन्दी के आधुनिक कविवाङ्मय की प्रगति में विशेष सहायता की आशा है।

बनारस मार्गशीर्ष १९९९ वि० 'रमण'

जय बलिशाला !

दीन बन्धु ! करुणानिधान, हे ! दीन दयाला नमों नमों ।
जीव मात्र की प्रति पल रक्षा, करने वाला नमों नमों ॥
निर्बल के बल राम ! रमे हो, तुम दुखियों के आँसू में ।
मूक हृदय की हाय ! दीन के, उर का छाला नमों नमों ॥
रक्षक ही भक्षक बन जाये, जीवन की फिर आश कहाँ ।
अमर क्रान्ति दासत्व ध्वंसिनी, भीषण ज्वाला नमों नमों ॥
अन्यायी यदि ! प्रिय जन भी हो, करदो उसका पूर्ण विनाश ।
कुरुक्षेत्र में 'कर्मवीर' का, कर्म निराला नमों नमों ॥
पराधीन रहना या रखना, मानवता का अमिट कलंक ।
नर क्या है ? नारायण पूजित, जय बलिशाला नमों नमों ॥
जीवन भर ! जो रहा जगाता, स्वतंत्रता का मंत्र महान ।
उस रण रंगी राणा का, रण कौशल भाला नमों नमों ॥
स्वतंत्रता के लिये जान पर, खेल गई वह बड़ भागिन ।
जय रण चंडी झांसी वाली, जय सुरबाला नमों नमों ॥
भेद भाव को त्याग ! सभी ने, गर्म रक्त से सींचा था ।
राष्ट्रतीर्थ विख्यात हमारा, जलियांवाला नमों नमों ॥
हो निराश जीवन से ! जिसने, अपना पथ पहचान लिया ।
अंधकार मे आश किरण का, क्षणिक उजाला नमों नमों ॥
सीने पर ! लाठी की चोटें, फिर भी हटे नहीं पीछे ।
स्वाभिमान पर ! मिटने वाले, स्वर्गीय लाला नमों नमों ॥
जहाँ शान्ति की अन्तिम सीमा, वहीं क्रान्ति का जन्म हुआ ।
करो मरो के ! मूल मंत्र की, अगनित माला नमों नमों ॥
पराधीन रह कर कब किसको, जीवन का आनन्द मिला ।
रूखा सूखा 'स्वतंत्रता' का, विकल निवाला नमों नमों ॥